जहां चाह वहां राह

लेखक
गिरधारीदान

श्री करणी प्रकाशन
गंगाशहर (बीकानेर)

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक "जहां चाह वहां राह" में प्रौढ़ पुरुष एवं महिला-साक्षरता केन्द्रों को भली भांति संचालित करने के लिये हमें कौन-कौन से उपाय काम में लाने चाहिये उन्हें एक कल्पित कहानी के रूप में बताये गये हैं।

वैसे तो समय पर काम आवे वही हथियार। क्योंकि परिस्थितियां सभी स्थानों की एकसी नहीं होतीं। परिस्थितियों के अनुरूप ही उपाय अधिक लाभप्रद रहते हैं। फिर भी यदि यह पुस्तक थोड़ा भोत भी मार्ग-दर्शन कर सकी तो मैं अपने आपको सफल समझूंगा।

प्रस्तुत पुस्तक के सभी नाम और घटनाएँ कल्पित हैं। इस नाते मैं समझता हूँ कि किसी भी भाई-बहन को किसी प्रकार का ऐतराज न होगा। फिर भी यदि अनजाने में किसी से देवगति से ही मेल खा जाय तो वह मुझे निर्दोष समझ कर क्षमा कर देंगे।

मैं श्री रामसिंह जी सुपुत्र श्री भैरुसिंह जी, बागौड़ का आभारी हूँ कि जिन्होंने आर्थिक सहायता देकर इस पुस्तक को अपनी देख-रेख में प्रकाशित करवाई।

गिरधारीदान

दो शब्द

श्री गिरधारी दान जी से मेरा परिचय बहुत पुराना है। मेरे लिये वे केवल परिचित ही नहीं हैं अपितु आदरणीय भी हैं। इसलिए उन्होंने जब मुझे प्रस्तुत पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के लिये कहा तो मैं सकोच में पड़ गई, फिर पुस्तक को आद्योपान्त देखा तो लगा कि मुझे अपना मन्तव्य तो इंगित कर ही देना चाहिये।

श्री गिरधारी दान जी जब कभी भी लिखते हैं तो किसी न किसी आदर्श की प्रेरणा से लिखते हैं। शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा का उन्हें दीर्घकालीन व्यावहारिक अनुभव है। आदर्श और अनुभव को मिलाकर वे अपनी कल्पना से जिस समाज का निर्माण देखना चाहते हैं, उसे वे अपनी विभिन्न कृतियों में प्रकट करते हैं। यह पुस्तक उसी दिशा का प्रयास है।

लेखक की सफलता-असफलता का निर्णय न तो भूमिका लिखने से होता है और न समालोचना से ही। साहित्यिक कृति के अच्छे बुरे की कसौटी उसके ग्रहीता पाठक ही होते हैं। मुझे लेखक की आदर्शवादी भावना अच्छी लगी है, क्योंकि उसमें लोक व्यंजन सम्बन्धी कमियों को भावी संस्करण में ठीक किया जा सकेगा, ऐसी मुझे आशा है।

गंगादेवी
एम०ए० बी०एड०, साहित्य रत्न
प्रधानाध्यापिका
श्री बीकानेर महिला मंडल
विवेकानन्द मार्ग
बीकानेर

स्वर्गीय मेजर जनरल श्री जयदेवसिंहजी, श्री भोमराज सरपंच, श्री गिरधारीदान एवं श्री गंगादास के साथ प्रो. शि. केन्द्र बरसिंहसर का निरीक्षण करते हुए।

समर्पण

श्रीमती रतन देवी दम्माणी

को

जिन्होंने समाज सेवा और विशेष करके प्रौढ महिला शिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योग दान दिया है।

गिरधारीदान

प्रौ० शिक्षा प्रसार-केन्द्र

सरस्वती मोहल्ला (गणेशपुर)

—:o:—

गणेशपुर शहर के सरस्वती मोहल्ले में आज एक सभा का आयोजन किया गया था। सभा का मकसद था साक्षरता-प्रचार। अगवा लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे। कई विछायत कर रहे थे। कई लाउड-स्पीकर लगा रहे थे। तो कई मोहल्ले के लोगों को ला रहे थे। इसमें कुछ अध्यापक थे। कुछ थे समाज-सेवी युवक। मोहल्ले के एक दो व्यक्ति भी दिखाई पड़ रहे थे।

सभा का समय ८ बजे रात्रि का था। इस कारण गैस की रोशनी भी हो रही थी। सभा प्रारम्भ करने का समय हो रहा था। अतः श्रोता-गण एक-एक दो-दो करके आ रहे थे। कुछ महिलाएं भी आती नजर पड़ रही थी। छोटे बालक तो पहले से ही शोर-गुल कर रहे थे। इस सभा के संचालक श्री मोहनलाल बालकों को शांत रहने को कह रहे थे। किसी को डराते थे। तो किसी को प्यार से बिठला रहे थे। वे बड़े व्यस्त से नजर पड़ रहे थे।

श्री मोहनलाल इस मोहल्ले की प्रौढ़ पाठशाला के संचालक थे। वे चाहते थे कि इस मोहल्ले के सभी अनपढ़ स्त्री-पुरुष साक्षर हो जाय। इसी ध्येय को लेकर ही उन्होने इस सभा का आयोजन किया था। उनका विश्वास था कि मोहल्ले वालो को समझाने से पढने वालों की सख्या बढ़ जायगी और उनकी प्रौढ-शाला चल निकलेगी। उनकी दिली इच्छा थी कि उसका केन्द्र पूर्ण सफल रहे।

श्री मोहनलाल इसी शहर के निवासी थे। वे एक सरकारी शाला में अध्यापन कार्य कर रहे थे। श्री निदेशक महोदय द्वारा सचालित साक्षरता-आदोलन से प्रेरित होकर उन्होंने इस मोहल्ले में साक्षरता केन्द्र का भार संभाला। उन्हे विश्वास था कि पढ़ने वाले तो आ ही जायेगे और इसी विश्वास को लेकर ही वे इस केन्द्र के संचालक बन बैठे। पर बात निकली उल्टी। ५-७ दिनों के बाद प्रौढ़ छात्रों की संख्या २-४ ही रह गयी। इससे उन्हें बडी निराशा हुई। करे तो क्या करे। सुपरवाइजर और टोप सुपरवाइजर आते और कमियां बता कर चल देते। किसी ने भी उस गरीब की सहायता नहीं की। करते भी कैसे? वे भी तो कोरे ही थे। केवल केन्द्रों को देखना ही

वे अपना कर्त्तव्य समझते थे । प्रौढ़ पढ़ने क्यों नहीं आ रहे हैं । इस मसले को हल करने के लिए उनके पास समय नहीं था और न ही वे इतना आगे बढ़ना चाहते थे । वे तो केवल अपने उच्च-अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए ही एकाध बार केन्द्रों का चक्कर लगा कर रिपोर्ट कर देने तक ही अपना कर्त्तव्य पूरा होना समझते थे ।

मोहन के कुछ साथियों ने यह भी सलाह दी कि क्यों इतनी चिंता करते हो सभी केन्द्र इसी तरह चल रहे है । रजिस्टर मे नाम होने चाहिएं । प्रौढ आये न आये । हाजिरी भर लिया करो । जब कभी कोई देखने को आये तो भाई-वीरा करके प्रौढ़ों को बिठा लिया करो । इसमें है ही क्या, दो दिन का मशाणिया वेराग है । ढीला पड़ जायगा । हम तो भाई ऐसा ही करते हैं । हम तो केन्द्र भी तभी जाते हैं जब देख लेते हैं कि आज तो कोई शिक्षा-विभाग का अधिकारी देखने आ रहा है । सभी निदेशक महोदय को खुश करने के लिए दौड़-धूप कर रहे हैं । सही लगन तो किसी में भी नहीं है। तुम क्यों चिंता से मर रहे हो ?

मोहन खरा व्यक्ति था । उसके गले ये बाते नहीं

उतरी । खोटा-खरा लिखना उसके वश का नहीं था। धोका देना वह महा पाप समझता था । उसने सुन रखा था कि या तो स्वांग भरना नही यदि भर लिया तो उसे लजाना नहीं । भाउकता के प्रवाह मे वह कर दूसरों की देखा-देखी केन्द्र खोल दिया और केन्द्र सचालक बन बैठा । कुछ दिन तो प्रौढ-शिक्षा समिति के सदस्यों ने साथ दिया । पर बाद में उनके पास बात करने को भी समय नही था । मोहन के बार-बार कहने पर या प्रार्थना करने पर कह देते कि—'मास्टरजी थे तो भोला हो । म्हैतो चेजे-भाटे रो काम करता-करता थक्या-मांदा घर आवां हां म्हाने तो टुकड़ो खाणे रे बाद खाट ही सूझे है । यदि दो-चार आंक सीख भी लेस्यां तो कुणसी हूंडी आणे लाग जासी । थाने किणी प्रकार रो लाभ होवे तो कदे कदास म्है पढ़ने आ बैठस्यां। रोजी ने म्हारे सू तो को आई जैनी ।

मोहन को ऐसी बाते सुनने से बड़ा दुख होता । पर करे तो क्या करे ? उसके पास भी ऐसा कोई कारगर सुझाव नही था कि जिससे वह उन्हे, प्रौढ-केन्द्र की ओर आकर्षित कर सके । अर्थात् यह कह सके कि आप लोगों को यह लाभ निश्चित होगा ।

उसके ध्यान में यह भी आया कि एक नवीन पोथी पढ़ लेने से उन्हें आर्थिक लाभ तो कुछ भी होगा नहीं, न वे आगे अध्ययन हो कर सकेंगे। फल यह होगा कि कुछ दिनों बाद वे फिर कोरे के कोरे रह जाँयगे। एक बार सरकारी आंकड़ों में भले हीं संख्या दिखाई जाय कि इतने प्रौढ़ साक्षर कर दिये गये हैं। पर उन्हें वास्तविक लाभ इस साक्षरता से तो मिलना नहीं है। इस कारण वह उनकी बात सुन कर चुप हो जाता। पर वह अपनी बात का धनी था। वह आगे वढ़ कर पीछे हटना नहीं जानता था। उसने अपने दिमाग में यह जचा लिया था कि इस मोहल्ले को तो साक्षर करके ही हटना है, पर अपने इस महत्वपूर्ण एव पवित्र कर्त्तव्य को पूरा करे तो करे कैसे, यह मार्ग उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसने कई नामी विद्वानों की शरण ली, पर लाभ कुछ नहीं हुआ। किसी ने भी मोहल्ले में एक दिन भी आकर उन लोगों को समझाने का कष्ट नहीं किया। समाज-सेवी सज्जनों के द्वार भी खट-खटाये। स० उप-निरीक्षक, उपनिरीक्षक एवं निरीक्षक महोदय से भी अपनी व्यथा सुनाई, पर उसकी बिमारी का इलाज करना किसी ने भी स्वीकार नहीं किया। वह रोज

७ बजे शाम से रात्रि के दस बजे तक पागल की तरह मोहल्ले में चक्कर लगाता या अपने प्रौढ़-केन्द्र पर रोशनी करके बैठा रहता। कभी एकाध प्रौढ़ आ गया तो आ गया, अन्यथा वह अकेला ही बैठा रहता था। जबकि मोहल्ले में लोग जगह-जगह पर बैठे गप्पें लगाते रहते, ताश खेलते रहते, झूठा वाद-विवाद भी करते रहते, खेल तमाशे में भी आधी-आधी रात तक घुला देते, पर प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र की ओर मुख नहीं करते। जब कहा जाता तो कह देते हम तो दिन भर काम करते-करते थक जाते हैं। आखिरी ऐसा क्या कारण है कि लोग साक्षर होने में रुचि क्यों नही लेते। यही एक विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाता रहता। क्या उपाय किया जाय कि लोगों की रुचि साक्षर होने की ओर झुकाई जाय।

पर किसी ने सत्य ही कहा है कि 'जहा चाह वहाँ राह' गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी रामायण मे लिखा है—

जा पर जाकी सत्य स्नेहू,
ते तेही मिलही न कछु संदेहू।

आखिरी हमारे इस दुखी, पर दृढ़ प्रतिज्ञक इस युवक की भी भगवान ने सुनी। एक दिन रात्रि के करीबन

९ बजे एक भगवां-वस्त्र धारी संत एकाएक उसके प्रौढ़-केन्द्र पर ही आ धमका ।

मोहन अपनी दो गैश की लालटेणों के बीच अकेला ही नतमस्तक बैठा-बैठा इसी अधेड़बुन में लगा हुआ था कि "क्या मैं इस केन्द्र को बंद कर दूं। कितने दिनों तक और बेमतलब तेल-का खर्च लगाता रहूँगा।" परन्तु बंद करने का विचार आते ही उसके दिल में जलन सी होने लग जाती थी। उसका मन मचल उठता था और केन्द्र बंद करने को कत्तई तैयार नहीं होता था, इसी बीच उसके कानों में आवाज पड़ी:— "बच्चा कुछ खाने को मिलेगा" मोहन आवाज को सुनकर चौंक उठा और झट से खड़ा हो गया। उसने देखा कि एक भव्य-मूर्ति भगवा-वेश में उसके सामने खड़ी है। सफेद दाढ़ी के बाल छाती को ढ़के हुए थे, एक हाथ में कमन्डल और बगल में कुछ कपड़ों की गठरी रखी हुई थी। उसके दु.खी मन को इस सौम्य-मूर्ति को देखते ही ऐसा भान हुआ कि साक्षात भगवान ही उसकी सहायता को आ गये हैं। उसने आव देखा न ताव, धम से साधु के पैरों पर गिर पड़ा।

साधु महाराज भी देखते के देखते ही रह गये।

प्रथम तो वे भी समझे ही नहीं कि बात क्या है। पर बाद में उनकी समझ में आया कि यह युवक दुःखी है और साधु का धर्म है दुखी की सहायता करना अतः उन्होंने मोहन के सिर पर अपना हाथ रख कर कहा — "उठो बेटा ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा। उस अन्तर्यामी ने ही मुझे तुम्हारे पास भेजा है। मैं तुम्हे आशीर्वाद देता हूँ कि भगवान तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे। उठो और बताओ, तुम्हें क्या चाहिए ?

साधु महाराज के ये ममता से सने हुए मधुर वचन सुन कर उसे बड़ी सात्वना मिली और वह झट खड़ा हो गया। उसने महात्माजी से अर्ज की— भगवन् विराजिये! मैं आपके लिए भोजन की व्यवस्था कर रहा हूँ।

"नहीं" महात्माजी ने अपनी सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा।

"क्यों भगवन्" मोहन ने हाथ जोड़ते हुए कहा। "अभी-अभी आपने भोजन के लिए ही तो फर-माया था"।

"क्या तुमने नहीं सुना," महात्माजी ने जमीन पर बैठते हुए कहा।

"क्या महाराज," मोहन ने पूछा–
"संत हृदय नवनीत समाना,,,महात्माजी अपने छाती पर हाथ रखते हुए कहा ।
"गुरुदेव अच्छी तरह समझाइये" ।
मोहन ने हाथ जोड़ कर कहा ।
'पहिले तो तुम यह बताओ कि तुम यहाँ पर दो-दो गैस की लालटेन जगाये हुए अकेले क्यों बैठे हुए हो ।

इस पर मोहन ने अपनी सारी राम कहानी महात्माजी को सुनायी । उसने यह भी प्रार्थना की कि वह इस मोहल्ले के केन्द्र को पूर्ण सफल बनाना चाहता है । भले ही उसे इसके लिए कितना ही परिश्रम करना पड़े । आज वह बैठा-बैठा यही सोच रहा था कि "इस मोहल्ले के लोग उसका साथ क्यों नही दे रहे है ? जबकि वह उनकी उन्नति के लिए सब कुछ करने को तैयार है । इसी उधेड़बुन में वह व्यस्त था कि क्या मैं इसे बन्द कर दूं, जबकि मोहल्ले वाले मेरा साथ दे ही नही रहे है ? यदि आज आपके दर्शन नही होते तो मैं यहाँ से सदा के लिए निराश हो कर चला जाता । पर इससे मेरी इस धारणा को बड़ी ठेस लगती कि मनुष्य क्या नहीं कर सकता ? वह कहता गया—महात्माजी कार्य

प्रारम्भ करके आपत्तियों से घबरा कर मैं पीछे नहीं हटता। पर यहाँ पर तो बात ही दूसरी है। जिनके लिए त्याग करना चाहते हैं। अर्थात् जिनके हित के लिए कार्य किया जाता है वे ही नहीं चाहते। अर्थात् गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। अब मैं आप की शरण में हूँ। आप ही मेरी इस लगन को पूर्ण करने की कृपा करें। यह कहते हुए उसने महात्माजी के चरणों पर सिर रख दिया। महात्माजी मोहन को थप-थपाते हुए कहने लगे:—उठो बेटा ! ईश्वर तुम्हारी इस परोपकारी भावना को सफल बनायेगा। यही लोग जो आज तुम्हारी तरफ देख ही नहीं रहे हैं, एक दिन तुम्हारे पैर पूजेंगे और तुम्हारे उपकारों के गुण-गान करते नहीं थकेंगे"।

महात्माजी कहते गये—पवित्र कार्यों में बाधाएँ आनी स्वाभाविक है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है:—

होगी सफलता क्या नहीं,
कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।
आपत्तियों के वार सारे,
वीर बन कर के सहो॥

उठो और कल यहाँ पर एक सभा का आयोजन

करो । मैं भी कल ठीक आठ वजे तुम्हारी इस सभा में भाग लूंगा । "अब जा रहा हूँ । ईश्वर तुम्हारा भला करे" । यह कह कर महात्माजी उठे और चल पड़े । मोहन उनकी ओर देखता रहा–ओर सोचता रहा कि क्या यह स्वप्न तो नहीं था ।

अन्त में वह उठा और लालटेण बुझा कर अपने घर चला गया । रात भर उसके मस्तिष्क में महात्माजी के शब्द गूंजते रहे

दूसरे दिन अपने कुछ साथियों को ले कर सूर्य अस्त होते ही–मोहल्ला सरस्वती में आ धमका और ऊपर वर्णित–सभा की तेयारी में लग गया ।

पहली सभा

ठीक आठ वजे महात्माजी पधारे ओर मोहन के हजार मना करने पर भी सभी के बीच नीचे ही यह कहते हुए कि "साधुओं का आसन तो जमीन ही है", वैठ गये ।

महात्माजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का सभी व्यक्तियों पर काफी प्रभाव पड़ा । प्रथम तो श्रोताओं की संख्या नगन्य ही थी, पर ज्यो ही महात्माजी आये, अड़ोस-पड़ोस के घरों से आने वाले स्त्री–

पुरुषों का तांता-सा बंध गया । देखते-देखते ही १०-२० व्यक्तियों के स्थान पर १००-१५० व्यक्ति दिखाई देने लगे । सभी स्त्री-पुरुष महात्माजी के चरण छू-छू कर यथा स्थान बैठते गये ।

सर्व प्रथम मोहन उठा और महात्माजी के चरण छू-कर कहने लगा:—श्रद्धेय एव परम-पूज्य महात्माजी एवं मेरे भाई-बहनों ! आज का दिन हमारे लिए बड़े ही सौभाग्य का दिन है, क्योंकि आज स्वयम् भगवान ही महात्माजी के रूप में हमारे यहाँ पधारे है । जिसका प्रभाव आप सभी लोग देख रहे है कि मेरी बार-बार प्रार्थना करने पर भी आप लोग यहाँ तक नही आते थे आज बिना बुलाये दौड़े हुए आ-रहे है । यह कृपा आज महात्माजी की ही है । अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि अपना यह मोहल्ला निश्चय ही एक आदर्श महोल्ला होगा और जैसा इसका नाम है उसी तरह सरस्वती का प्रत्येक घर में निवास हो जायेगा । मैं अपनी तरफ से, प्रौढ़-शिक्षा-समिति के सदस्यों की तरफ से और इस मोहल्ले के प्रत्येक नर-नारी की तरफ से महात्माजी का हृदय से स्वागत करता हुआ प्रार्थना करता हूं कि वे अपने उपदेशामृत द्वारा हम सभी को लाभा-

न्वित करने की महत्ती कृपा करें । "यह कहता हुआ मोहन अपने स्थान पर बैठ गया ।

महात्माजी जब प्रवचन के लिए उठने लगे तो सभी ने प्रार्थना की कि महाराज आप बैठे-बैठे ही उपदेश देवे । इस पर महात्माजी ने अपने स्थान पर ही बैठे-बैठे कहने लगे:—भाई और बहनों ! मैं अपने आप को आज बड़ा ही सौभाग्यशाली समझ रहा हूँ क्योंकि मुझे आज ऐसी सभा में बोलने को कहा गया है जिसका उद्देश्य है पिछड़े भाई-बहिनों में शिक्षा का प्रसार करना । इसे इसलिए कह रहा हूँ कि हमारा मुख्य उद्देश्य—शिक्षा-प्रसार ही होना चाहिए । साक्षरता प्रसार तो शिक्षा-प्रसार का एक प्रमुख अंग-मात्र है । पर यह अंग है अनिवार्य । क्योंकि यह अंग अंधेरे में जैसे दीपक काम करता है, उसी तरह शिक्षा-प्रसार में प्रकाश डालने का कार्य करता है । अत. इस नाते सर्व प्रथम साक्षरता-प्रसार को ही लेना अधिक श्रेयस्कर रहता है । क्योंकि साक्षरता ही हमे इस योग्य बनायेगी कि हमें क्या-क्या ओर किस प्रकार करना चाहिए ? परन्तु मैं यह भी प्रार्थना करूंगा कि इसके साथ-साथ समाज-सुधार के दूसरे अंगों का सुधार भी आवश्यक ही नही अनिवार्य है।

उन अगों का मुधार हमारे साक्षरता प्रसार को अधिक बल देगा । साथ-साथ में हम उन व्यर्थ के खर्चों मे भी बचजायंगे । जिन पर रूढ़ि वादिता के कारण बेकार हजारो रुपये खर्च होते रहते है । स्वास्थ्य सम्बन्धी नियम का पालन भी हमारे लिए इतने ही आवश्यक है, जितना धन कमाना । क्योंकि सारी बात शरीर की निरोगता पर ही आधारित है । पर इन नियमो का पालन भी हम पूर्ण रूप से तभी कर सकते है, जबकि हम साक्षर हों । अत: साक्षर प्रसार शिक्षा-प्रसार का पहिला एव अनिवार्य अंग है और इसी कारण सरकार और समाजसेवी युवक-युवतियाँ साक्षरता-प्रसार को पहल दे रहे हैं । क्योंकि पढ़े-लिखे बिना हम नागरिकता के नियमों को भी पूरी तरह नही समझ सकते जबकि नियमो को समझ ही नही सकते तो उनको सही रूप मे पालन भी कैसे कर सकते है । नागरिकता के नियमो का सही रूप मे जब पालन न हो सकेगा तो अराजकता फैल जायेगी और फल यह होगा कि नागरिक-जीवन रूपी गाड़ी दल-दल में फस जायेगी । जो आजकल आप लोगों के सामने वर्तमान देश की स्थिति मे साफ-साफ प्रकट हो रही है ।"

कुछ देर ठहर कर महात्माजी फिर कहने लगे:– आप लोग सोचते होंगे कि हम शाम को दिन भर के शारीरिक परिश्रम से थक कर घर आते हैं और खा पी कर पड़ रहने की सोचने लगते हैं। फिर भी कहीं घंटा-आध घंटा मर-पच कर दो–चार अक या अक्षर सीख भी लिए तो इसमें हम कौन से विद्वान बन जायेंगे या कोई रोजगार पा जायेंगे। आप लोगों का यह सोचना देखा जाय तो निरमूल नहीं है, पर जब हम गहराई से इसे सोचें तो इसकी तह में बड़े–बड़े लाभ हमें नजर पड़ेंगे।"

यह सुनते ही कुछ आवाजें आईं, "स्वामीजी वे कौन–कौन से लाभ है?"—

इस पर स्वामीजी ने कहा:—तो सुनिये:—

(१) प्रौढ़-शिक्षा–केन्द्र हमें बेकार की बातों से बचाता है, अर्थात् रात्रि में भोजन के पश्चात् हम लोग स्थान–स्थान पर इकट्ठे हो कर फीजूल का वाद–विवाद करते रहते हैं, कुछ ताश–खेलने लग जाते है तो कुछ अन्य बुरे कामों की ओर झुक जाते हैं। प्रौढ़-शिक्षण-केन्द्र हमें इन बुरी बातों से बचाकर हमारे उस समय को भलेकामों में लगाता है।

(२) दूसरे प्रौढ़-शिक्षा केन्द्रों पर जाने से हमें रामायण या महाभारत वा अन्य धार्मिक चर्चा सुनने को मिलती है ।

(३) तीसरे सामयक समाचार भी प्रतिदिन प्रौढ-शिक्षा-केन्द्रों पर सुनाये जाते है ।

(४) चौथा लाभ यह है कि हम साक्षर होते जाते है । जो हमारे लिए इस प्रजातन्त्र-युग मे आवश्यक ही नही अनिवार्य भी है ।

(५) पाँचवा लाभ यह होगा कि हम यहाँ पर प्रतिदिन इकट्ठे हो कर हमारे महोल्लो मे सामाजिक सुधार-सम्बन्धी कार्य भी कर सकेंगे ।

(६) छठा लाभ यह हो सकता है कि यदि हम इस समय मे कुछ लघु-उद्योग सम्बन्धी कार्य भी करने लगे तो हमें आर्थिक लाभ भी मिल सकता है ।

(७) सातवा लाभ यह होगा कि हमारे बालक-बालिकाओं के संस्कार पुराने रूढ़ि वादिता की ओर से हट कर आधुनिक सभ्य-समाज की स्थापना की ओर झुकने लगेंगे ।

(८) आठवा लाभ यह होगा कि हमारे बूढ़े-बड़े भाई-बहनों का अध्ययन करते करते स्वर्गवास

हो जायगा तो अगले जन्म में उनकी रुचि शिक्षा की ओर अधिक होगी और वे पूर्ण विद्वान होंगे। जैसा कि हमारा हिन्दू शास्त्र कहता है कि अंत समय में व्यक्ति के मन में जो भावना रहती है, वही उसे अगले जन्म में मिलती है।

(९) नववां लाभ यह हो सकता है कि आपके इस प्रौढ़-शिक्षा- केन्द्र के माध्यम से समय-समय पर अच्छे से अच्छे विद्वानों तथा महात्माओं के भाषण एवं प्रवचन सुनने को मिलते रहेंगे।

इसी प्रकार अन्य और भी छोटे-मोटे अनेक लाभ प्राप्त हो सकते है। जैसाकि किसी ने कहा कि— जहँ सम्पत्ति तहँ सम्पत् नाना। "भले काम का फल सदा भला ही होता है।" इसमें कोई दो राय नही है। अतः मेरी आप लोगों से यही प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक इस प्रौढ़ शिक्षा-केन्द्र से लाभ उठावें। मैं भी आपके इस केन्द्र पर हर शनिवार को अवश्य आने का प्रयत्न करता रहूँगा। क्योंकि आपके इस प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र के संचालक श्री मोहनलाल

एक पूर्ण समाज सेवी एवं दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति है। मुझे पूर्ण यकीन है कि यह पुरा आदि महोल्ले को सभी तरह से एक आदर्श महोल्ला बना कर ही दम लेगा। यदि आप लोगो का सहयोग इसे मिलता रहा। मैं श्री मोहनलाल से प्रार्थना करता हूं कि वह अपने केन्द्र के दैनिक कार्य-क्रम पर प्रकाश डाले। इसके साथ इस महोल्ले के भाई-बहिनो से भी अपील करता हूं कि वे केन्द्र को भली-भांति चलाने के लिए अपने मे से योग्य व्यक्तियो की शिक्षा-समिति की स्थापना करे। यह कह कर स्वामीजी ने अपना भाषण बन्द कर दिया।

तत्पश्चात् श्री मोहनलाल ने खड़े हो कर अपने प्रौढ़-शिक्षण-केन्द्र के दैनिक कार्य-क्रम की रूप रेखा पर निम्न प्रकार प्रकाश डाला।

श्रद्धेय गुरुदेव महोल्ले के आदरणीय महानुभाव एवं मेरे सहयोगी भाइयो ! मै आज स्वामीजी का पूर्ण आभारी हूँ कि उन्होने पधार कर अपने वचनामृतो से इस मूरझते हुए केन्द्र को फिर से जीवन दान दिया। मुझे स्वप्न मे भी यह आशा नही थी कि इस महोल्ले के भाई-वहिन इतनी संख्या मे इस प्रौढ़-

शिक्षा-केन्द्र पर पधारने की कृपा करेंगे, पर स्वामीजी की चरणों की रज ने आज इस महोल्ले में अपना पूरा चमत्कार दिखा कर सभी भाई-बहिनों के दिलों में शिक्षा के प्रति महान श्रद्धा उत्पन्न कर दी। अब मुझे आशा ही नही पक्का विश्वास हो गया है कि मेरा यह केन्द्र श्री गुरुदेव के चरण-रज के प्रताप से एक आदर्श प्रौढ शिक्षा-केन्द्र बनकर ही रहेगा—

प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र का दैनिक-कार्यक्रम निम्न प्रकार रहेगा:—

७ बजे शाम से ८ बजे तक धार्मिक-चर्चा (रामायण या महाभारत या अन्य आवश्यक धार्मिक चर्चा)

८ बजे से ८-१५ तक ईश प्रार्थना-प्रौढ़-छात्रों द्वारा:-

८-१५ से ६-४५ तक साक्षरता कार्यक्रम:-

६-४५ से १०-०० तक भजन-कीर्तन-

१०-०० से १०-२५ तक सामयक-समाचार-

१०-२५ से १०-३० राष्ट्र-गीत-

यह कार्यक्रम मैंने अपने विचारों के आधार पर आप लोगों के समक्ष रखा। इसमें महोल्ले के लोगों की आवश्यकतानुसार हेर-फेर भी किया जा सकता है। समय भी सर्दी-गर्मी के अनुसार आगे-पीछे होता रहेगा।

७ बजे से ८ बजे तक तो खासकर बुढ़े-बढ़ेरे भाई-बहन ही अधिक भाग लेंगे । क्योंकि इस समय में उनकी रुचि अनुसार धार्मिक चर्चा की व्यवस्था की जायगी । इस कार्य के तत्काल बाद ही प्रौढ छात्रों द्वारा ईश–प्रार्थना होगी और उसके पश्चात् शिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया जायगा । यह कार्यक्रम दो भागों मे विभाजित रहेगा–अर्थात् पहिले ३० मिन्टों में अक्षर-ज्ञान तथा दूसरे ३० मिनटों में अंक ज्ञान दिया जाया करेगा । इसके पश्चात् प्रौढ़-छात्रों द्वारा भजन और कीर्तन को व्यवस्था रहेगी । यह व्यवस्था प्रौढ़-छात्रों की रुचि अनुसार एकादशी, अमावस्या और पूर्णिमा को बढाई भी जा सकेगी ।

कीर्तन के तत्काल बाद ही सामयक समाचार भी समाचार-पत्रों के आधार पर सुणाये जायेंगे अन्त में राष्ट्र गान होगा और केन्द्र का उस दिन का कार्य समाप्त हो जायगा ।

हर रविवार को शिक्षण-कार्यक्रम बंद रहेगा पर अन्य कार्य सदा की भाँति चलते रहेंगे। शिक्षण-कार्य-क्रम के समय मे समाज-सुधार सम्बन्धी कार्य-क्रम पर विचार विनिमय चलेगा । महोल्ला सुधार कार्य के लिए निम्नलिखित समितियों की आवश्यकता होगी:—

(१) साक्षरता प्रसार समिति ।
(२) आर्थिक दशा—सुधार—समिति ।
(३) कूरीतियाँ—निवारण समिति ।
(४) स्वास्थ्य—सुधार समिति ।

प्रत्येक समिति में कम से कम ५ सदस्य अनिवार्य रूप से होने चाहिए । इस तरह चारों समितियों में २० सदस्य होगें और इन पर एक सभापति २१ वां व्यक्ति वह होगा जिसे ये २० सदस्य चुन लेगें ।

अतः अब मैं स्वामीजी से प्रार्थना करूंगा कि वे अपनी अध्यक्षता में इन समितियों का गठन करा देने की महत्ती कृपा और करें । इतना कहने के पश्चात् मोहन ने अपना स्थान ले लिया ।

कुछ देर समय में सन्नाटा सा छाया रहा । पर थोड़ी देर बाद ही स्वामीजी ने गुरू गम्भीर वाणी में कहा—भाइयों अब थोड़ी देर हमें "रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम के नाम का कीर्तन करना जरूरी है । क्योंकि उस पतित पावन की कृपा से ही हम अपने इस पवित्र कार्य में संलग्न हो सकते हैं । इतना कह कर स्वामीजी बड़ी ही मधुर वाणी में कीर्तन प्रारम्भ कर दिया—और उनके साथ साथ ही कम से कम २०० व्यक्तियों की स्वरीली

ध्वनि महोल्ले भर में राम नाम की गुन्जार गर्जित करदी । यह कार्य ठीक १५ मिन्ट तक चलता रहा। १५वों मिन्ट समाप्त होते ही स्वामी जी भगवान रामचन्द्र की जै के साथ किर्तन समाप्त करते हुए कहने लगे मैं सबसे प्रथम आप लोगों से यही प्रार्थना करता हूं कि आप अपने इस महोल्ले के उस सज्जन का नाम बताने की कृपा करें जिसे आप सभी लोग अपना नेता चुनना पसंद करेंगे । या जिसकी राय आप सभी लोगों को मान्य होगी ।" इतना कहने के बाद स्वामीजी चुप हो गये । सभा में थोडी देर कानाफूसी के बाद एक अधेड व्यक्ति ने खडे होकर कहा कि—"म्हारे मे तो गोपाल भाई ही सारा जगा मे मानीजतो और आपरी खावणियो मिनख है । म्हारे में तो वीरी बात टालणियों एक ही कोईनी ।" इतना कहने के पश्चात् वह व्यक्ति फिर अपनी जगह बैठ गया—

पर स्वामीजी ने बडी मधुर और गम्भीर वाणी मे कहा कि "गोपाल भाई तो सबकी कामना पूरी करने वाले है । अत वे अपने लोगो की कामना अवश्य पूरी करेंगे । मै गोपाल भाई से अर्ज करु हूँ कि वे मेरे पास आने की कृपा करे ।" इतना कह

कर स्वामीजी फिर चुप हो गये । पर एक दुबला-पतला व्यक्ति जिसकी आयु कोई ६० या ७० के बीच मालूम पड़ रही थी आहिस्ते से उठकर स्वामीजी के आगे आ खड़ा हुआ ।

स्वामीजी ने हाथ जोड़ कर कहा "आओ गोपाल भाई" हम तो आपकी ही इंतजार में थे"।

इस पर गोपाल भाई ने बड़ी नम्रता से हाथ जोड़ते हुये कहा "महाराज थे हाथ जोड़ र म्हारे माथे पाप मत चढाओ । हूं तो आपरो और समाज रो दास हूँ। आप लोग जो भी आज्ञा देस्यो बीने म्हारे हूं निभसी भठे तक निभाने की पूरी कोशिश कर स्यूं । आगे भगवान की मर्जी होसी जिकी काम आसी ।"

"मर्जी तो भगवान की ही काम आसी ।" स्वामीजी ने ऊपर की ओर हाथ जोड़ कर कहा । पर भगवान भी तो हम में ही है । हम से अलग वह कहाँ जा सकता है । अतः गोपाल भाई हम तो आपको साक्षात् गोपाल मानकर चलेंगे । गोपाल ने जिस तरह वृज के ग्वाल-बालों की कंस के भेजे हुए राक्षसों से रक्षा की थी उसी तरह आप भी अपने इन महोल्ले के भाई-बहनों को अशिक्षा एवं कुरीतियों रूपी राक्षसों से जो समाज को डूसने वाले कंसों ने अपनी

स्वार्थ सिद्धी के लिए फैला रखी है, रक्षा करोगे।"

"रक्षा करने वालो तो सांवरियो ही है स्वामीजी !" गोपाल भाई ने स्वामीजी के आगे हाथ जोड़ते हुए कहा।

स्वामीजी ने कुछ जोर देते हुए कहा—"है तो सांवरियो ही। पर वह है तो हममे ही। हम से अलग कहाँ है। हम अपनी बोल-चाल मे कहते ही रहते है कि आत्मा सो परमात्मा। दूसरे गोपाल भाई यह भी सत्य है कि—जे कहनी करनी हुवे तो नर नारायण होय।

लोगों ने बिल कुल साथ दिया ही नही । इनकी हिम्मत टूट गई पर इन्हे अपनी कही हुई बात को जाते देखकर बड़ा दुःख हुआ । दुःख ही नही हुआ यह उसके पीछे पागल से हो गये । इस भाई ने एक दिन भी नागा नही की । आप लोगों के घरों के भी चक्कर लगाये । क्यों ! इसलिए कि कही कही हुई बात चली न जाय । हमारे पुरखों ने कहा है– रहो थाख और जाओ लाख । मैं कई दिनों से इस गरीब की व्यथा को महसूस कर रहा था । क्योंकि इसकी लगन लोक-सेवा के लिए थी । अपने स्वार्थ के लिए नही । यह तो आप लोग भी जानते हैं कि नहचे नीड़ो भगवान है । और यह मोहन की पक्की और निस्वार्थ लगन का ही फल है कि आज गोपाल भाई हाथ जोड़े मोहन की बात निभाने को तैयार खड़ा है । मैं इनके उन दूसरे साथियों को भी जानता हूँ जिन्होंने बांते तो बढ–बढ़ कर की थी । पर उन्हें निभाने का प्रयत्न एक दिन भी नहीं किया । क्योंकि उन्हें बातें ही करनी थी । काम नहीं । उन्होंने इसे भी कहा था–"क्यो मर रहे हो । कौन सा मिट्ठा हाथ लगेगा ।" पर इसने क्या उत्तर दिया था यह आप लोगों को मालूम नही है । इसने कहा

था–"मोहन आगे बढकर पीछे हटना नहीं जानता। और झूठी लिखा–पढ़ी को वह महापाप समझता है।"

अब मैं अधिक कुछ न कह कर यही कहूंगा कि गोपाल भाई आप मोहन की बात को पूरी उतारो और इनकी बताई हुई उन चारों समितियों के लिए योग्य और लगन के पक्के बीस युवको को छांटो और उनके कधो पर यह आवश्यक एव पवित्र कार्य का भार डाल दो।" इतना कहकर स्वामीजी चुप हो गये।

कुछ देर तो सभा मे फिर शान्ती रही पर अन्त मे श्री गोपाल भाई ने श्रोताओ की ओर मुड़ कर कहना प्रारम्भ किया।

भाइयो ! स्वामीजी ने जो-जो बाते कही है वे सारी की सारी आपणे भले की है। आं बाता ने निभाणी अब आपणे ही हाथ में है। आपणे इ गुरसतों महोल्ले मे कोई सौ घर है। जिणमें आधा घर तो माल्यां रा है। २०–२५ घर मेघवालरां ओर बाकी रा घर ब्राह्मण, सुद्रा और नायको रा है।

इन घरो में बसने वाली सख्या ५०० के आस-पास बताई जाये है। जिण मे आधा तू घणा रे तो

कालो अक्षर भैंस बराबर है । जदि आपां दसखत करना भी सीख लेस्यां तो अगूठों लगाग मूं तो गेल छूटसी । दूसरे घर रो लेग-देग भी लिख सकां तो कितीं वड़ी वात हुवे । दूकानदार मनमें आवे जिता पीसा तो को ले सकेनी । बूढा-वडेरा ने राम रो नाम रोज सुगासी । आ कितीक वड़ी वात है पहली तो भाई मोहन म्हारे जची को हीनी । इंरो कारग ओ है कि वोटांला आये दिन इसी वातां करता फिरे है । म्हे जागियो ओभी वांरो ही कोई अड़गो है । पग अव स्वामीजी महाराज पधारग्या तो सोलह आना जचगी कि बात साची है अब म्हे लोग रोज आस्या । पढगों तो इं सभा मे हुसी जिस्योड़ होसी पग हाजिरी रोज भर देस्या । राम रो नाम भी इं मिस काना मे पडसी । भगवान स्वामीजी महाराज ने भेज्या है । तो इये महोल्ले रो भलो ही होसी । इंमे फर्क को हैनी । सो भाइयों १५-२० जगां-स्वामीजी तथा भाई मोहन कवे जिया कमेटी वगाय र काम में लाग ज्याओ । कमेठ्यां में म्हां बूढा हूं तो काम होवे लो नहीं । ओ काम जवानारो है। थे लोग आगे आओ । पढो, और बास रो भलो होवे जिस्यो काम करो । आगा है, भगवान भलो ही कर

सो ।" यह कहने के पश्चात् गोपाल भाई बैठ गये । तत्पश्चात् कुछ समय तक तो धीरे धीरे आपस मे बाते होती रही । पर थोड़ी देर बाद ही ४—५ युवक खडे होकर कहने लगे—"हम तैयार हैं । मास्टर जी म्हाने जिको काम वतासी वो काम म्हे वरावर करता रहस्यां । कमेठ्या वरणाऐ रो काम मास्टरजी रो है । आदमी १५ या २० जित रा चाइजे उतरा ही तैयार हो ज्यास्या ।" यह कहकर वे युवक वैठ गये ।

इस पर स्वामीजी उठे और वोले—"धन्यवाद" मुझे इस महोल्ले से ऐसी ही आशा थी । फिर भी मैं आप लोगो से वनोर चेतावनी फिर कह देता हूँ कि आप-लोग इये काम मे ढील-ढाल विल कुल मत करिया । मैं आशोर्वाद देता हू एक-दो वर्ष में ही आपका यह महोल्ला इस शहर का एक सवसे अच्छा महोल्ला हो जायगा । शहर के वडे से वडे लोग आपका महोल्ला देखने आयेगे । मैं अव जाता हूँ । अगले शनीचर को फिर इसी समय आऊंगा और आप लोगो से आगे क्या—क्या और कैसे करना है वात करूगा । इसी वीच भाई मोहन कमेटी वना लेंगे । कमेटी के सदस्यो को क्या करना होगा । यह भी

बता देंगे । कल से रामायण ठीक ७ बजे प्रारम्भ कर दी जायगी । बाकी का कार्य-क्रम भी ठीक वैसे ही चलेगा जैसा मोहन ने बताया है । समाचार सुनने भी जरूरी है । क्योंकि अब हम स्वतन्त्र-भारत के नागरिक है । हमें हमारे देश तथा देशवासियों के हित में सदैव काम करते रहना है । वो हम जब तक सही रूप में नहीं कर सकेंगे । जब तक हमें देश में होने वाले कामों की गतिविधि का पता न चलता रहेगा । यह पता समाचार-पत्र, रेडियो आदि से प्रतिदिन लेना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य सा है। अतः मैं मास्टर साहब से कहूंगा कि वे समाचार पत्र अपने साथ अवश्य लाया करें । आशा है आप लोग मिल कर काम करोगे । तो आप के वास में वासाऊ रेडियो का तथा लाउड स्पीकर का भी प्रबन्ध हो जायगा । इस शाला भवन को भी ठीक करना होगा। आदि बातों पर आगे बात करेंगे । जै हिन्द–ईश्वर आपका भला करे ।" यह कहते हुए स्वामीजी रवाना हो गये ।

लोगों ने चाय-पाणी की अर्ज की पर वे माने नही । चले गये । इस पर मोहन ने लोगो को धन्य-वाद देते हुए कहाः—भाइयों स्वामीजी के आशीर्वाद

और आप लोगों के सहयोग से मैं आशा करता हूँ कि अपने को जरूर सफलता मिलेगी । अपना यह महोल्ला थोडे समय में ही आत्म निर्भर हो जायगा। अब मैं प्रार्थना करता हू आप लोग पधारो । पर इसी तरह रोज दर्शन देते रहोगे तो हम काम करने वालों का उत्साह चौगुना रहेगा । कल हम कमेटियाँ बना लेंगे । उन्हे उनकी पसंद के अनुसार काम भी सोप देंगे । शनिचर को स्वामीजी का आशीर्वाद भी उनको मिल जायगा । जै हिन्द ।''

सभा समाप्त हो गयी । लोग-बाग आपस में बात-चीत करते हुए अपने-अपने घरों की ओर जाने लगे। मोहन भी गैस की लालटेण पडोस के घर पर रख कर अपने घर की ओर चला गया ।

दूसरी सभा

पांच दिन लगातार प्रौढ शिक्षा-केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से चलते रहने के बाद शनिवार आ गया शनिवार की प्रतिक्षा सभी कर रहे थे । क्योंकि इस दिन स्वामीजी ने आने का आश्वासन दिया था ।

इस केन्द्र का संचालक श्री मोहन लाल भी प्रतीक्षा

में थे। क्योंकि उसके केन्द्र को प्राण–दान देने वाले स्वामीजी ही थे। जिस केन्द्र में एक ही छात्र नहीं आ रहा था। वहाँ आज ४० के करीब प्रौढ़ छात्र आने लग गये थे।

दूसरे चारों ओर कमेटियों के २०, युवकों ने भी पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था। ५० वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों ने भी कम उत्साह नही दिखाया। वे भी धर्म-कथा सुनने के बाद घंटा-आध घंटा अक्षर ज्ञान लेने लग गये थे। इस तरह ७ बजे से ११ बजे तक केन्द्र पर शिक्षा–मेला सा लगने लग गया था। इन सबकी जड़ में था स्वामीजी का उपदेश! जिसने इस महोल्ले में जादू का सा चमत्कार दिखाया था।

यही सब कारण थे कि सभी लोग शनिवार की प्रतीक्षा प्रेम से कर रहे थे। शनिवार आया। दिन में महोल्ले भर में उत्साह की लहर सी दौड़ रही थी। क्या पुरुष, क्या महिला, क्या प्रौढ और क्या बालक सभी की जबान पर स्वामीजी की ही बात थी। सभी आतुरता के साथ शाम की प्रतिक्षा कर रहे थे।

ठीक ७ बजे ही स्वामीजी महाराज आते दिखाई पड़े। सभी लोग घरो को छोड़ कर केन्द्र की ओर

दौड पड़े । देखते–देखते ही एक २०० स्त्री–पुरुषों की भीड़ केन्द्र पर इकत्रित हो गई और ज्यूंही स्वामीजी पधारे उनके जै-जै कार से आकाश गूंज उठा । इस गुंजार के साथ ही स्वामीजी महाराज ने आशन ग्रहण किया ।

आज सभी लोगो की इच्छा थी कि रामायण स्वामीजी के मुखारबिन्द से ही सुने । महापुरुष तो अन्तरयामी होते हैं । अत स्वामीजी ने भी लोगों की इच्छा का अनुभव करते हुए स्वयम् ही रामायण सुनाने के लिए तैयार हो गये ।

स्वामीजी ने रामायण सुनाने से पूर्व रघुपति राघव राजाराम के नाम का कीर्तन बडे प्रेम से किया । सभी स्त्री–पुरुषों एवं बालक–बालिकाओ ने भी वड़े प्रेम के साथ भाग लिया । सारा महोल्ला राम–नाम की धुन से मुखरित हो उठा था । इसके तुरंत वाद स्वामीजी ने रामायण सुनाना प्रारम्भ कर दी । आज का प्रकरण था भगवान रामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी का अपने गुरु विश्वामित्र के साथ जनकपुर में पहुचना, भगवान रामचन्द्र जी द्वारा धनुष–भंग तथा भगवान परशराम का लक्ष्मणजी के साथ संवाद । स्वामीजी की मधुर एव गम्भीर वाणी ने

इस धार्मिक-चर्चा में और चार चांद लगा दिये।

सभी लोग ध्यान से रामायण सुन रहे थे। जनकजी की चिन्ता:—"वीर विहीन भूमि मे जानी" और लक्ष्मणजी का जवाब:—"कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊं।"

परशराम जी का आते ही पूछना:—

"अति रिस वोले वचन कठोरा।
कहु जड जनक धनुप कै तोरा॥

इस पर भगवान राम ने शान्त और मृदु वानी में उत्तर दिया:—

"नाथ संभु धनु भंजन हारा।
होइहि कउ एक दास तुम्हारा॥"

आगे जब परशुरामजी का क्रोध बढता ही गया तो लक्ष्मणजी हंसकर वोले:—

लखन कहेउ हंसि सुनहु मुनि,
क्रोध पाप कर मूल।
जेहि वस जन अनुचित करहि,
चरहि विश्व प्रतिकूल॥

इस तरह लक्ष्मणजी के तीखे एवं टेढे वचन सुनकर जब परशुरामजी महा क्रोधित हो गये तब श्री रामचन्द्रजी वोले:—

"आर्त विनीत मृदु सीतल वानी।
वोले राम जोड़ि जुग पानी॥

दौड़ पड़े । देखते–देखते ही एक २०० स्त्री–पुरुषो
भीड़ केन्द्र पर इकत्रित हो गई और ज्यूंही स्वामी
पधारे उनके जै-जै कार से आकाश गूंज उठा ।
गुंजार के साथ ही स्वामीजी महाराज ने अ
ग्रहण किया ।

आज सभी लोगो की इच्छा थी कि राम
स्वामीजी के मुखारविन्द से ही सुने । महापुर
अन्तरयामी होते हैं । अत स्वामीजी ने भी लो
इच्छा का अनुभव करते हुए स्वयम् ही राम
सुनाने के लिए तैयार हो गये ।

स्वामीजी ने रामायण सुनाने मे पूर्व
राघव राजाराम के नाम का कीर्तन बड़े प्रे
किया । सभी स्त्री–पुरुषों एवं वालक–वालिका
भी वड़े प्रेम के साथ भाग लिया । सारा म
राम–नाम की धुन से मुखरित हो उठा था ।
तुरंत वाद स्वामीजो ने रामायण सुनाना प्रारम्भ
दी । आज का प्रकरण था भगवान रामचन्द्रजी
लक्ष्मणजी का अपने गुरू विश्वामित्र के साथ ज
पुर में पहुंचना, भगवान रामचन्द्र जी द्वारा धनु
भग तथा भगवान परशराम का लक्ष्मणजी के सा
संवाद । स्वामीजी की मधुर एव गम्भीर वाणी ने

इस धार्मिक-चर्चा में और चार चांद लगा दिये ।

सभी लोग ध्यान से रामायण सुन रहे थे। जनकजी की चिन्ता:—"वीर विहीन भूमि में जानी" और लक्ष्मणजी का जवाब:—"कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊं।"

परशुराम जी का आते ही पूछना:—

"अति रिस वोले वचन कठोरा ।
कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा ॥

इस पर भगवान राम ने शान्त और मृदु वानी में उत्तर दिया:—

"नाथ संभु धनु भंजन हारा ।
होइहि कउ एक दास तुम्हारा ॥"

आगे जब परशुरामजी का क्रोध बढ़ता ही गया तो लक्ष्मणजी हंसकर वोले:—

लखन कहेउ हंसि सुनहु मुनि,
क्रोध पाप कर मूल ।
जेहि वस जन अनुचित करहि,
चरहि विश्व प्रतिकूल ॥

इस तरह लक्ष्मणजी के तीखे एवं टेढ़े वचन सुनकर जब परशुरामजी महा क्रोधित हो गये तब श्री रामचन्द्रजी वोले:—

"आर्त विनीत मृदु सीतल वानी ।
वोले राम जोड़ि जुग पानी ॥

सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना
बालक वचनु करिअ नहीं काना ॥
वर रै बालकु एक सुभाऊ ।
इन्हहि न संत विदूर्षाहि काऊ ॥
तेहिं नही कछु काज बिगारा ।
अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोपु वधु वंधव गोसाई ।
मोपर करिअ दास की नाई ॥

इस भाति स्वामीजी सरल एव मृदु राग में चौपाइयो को गा-गाकर उनका अर्थ सरल एव भाव भीने शब्दों में सुना रहे थे । बालक एवं वृद्ध सभी बड़े प्रेम से सुनने में मस्त हो रहे थे ।

वैसे रामायण सुनाने में हमारे अध्यापक श्री मोहन लाल भी कम नहीं थे । पर स्वामीजी की जिह्वा पर तो स्वयम् सरस्वती विराज रही थी ।

लोग ठगे से एक टक स्वामीजी की ओर देख रहे थे । वे नही चाहते थे कि रामायण का सुनाना वंद हो जाय । पर ज्योंही श्री मोहनलाल ने आठ बजने का संकेत दिया । स्वामीजी ने रामायण सुनाना वंद कर दिया ।

इस पर सभी ने बार-बार प्रार्थना की कि "स्वामीजी

और सुनाइये ।"

पर स्वामीजी अति मृदु स्वर में उत्तर देते हुए बोले—"भाइयो ! यहां पर श्री मोहन भाई का अधिकार है । हमें उनके बनाये नियमों का पालन करना चाहिए । भगवान रामचन्द्रजी ने कहीं पर भी नियमों का उलंघन नहीं किया अतः हमें भी नियमों में बंध कर चलना चाहिए । इसी से हमारा और हमारे राष्ट्र का भला है । आज कल की आरा-जकता जो खासकर छात्रों द्वारा प्रदर्शित की जा रही है। यह तो आप लोग रोज़ सुन ही रहे हो । इससे देश का कितना अहित हो रहा है । यह भी आप लोगो से छिपा नही है । यह सभी बाते नियमों का पालन न करने के कारण ही हो रही है । अतः मेरी आप सभी से प्रार्थना है कि आप आपके इस प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र के सभी नियमों का आदर के साथ पालन किजिये । इससे आप लोगों को अपार आनंद प्राप्त होगा । इन ५-७ दिनों में ही आप लोग जान गये होंगे कि यह केन्द्र आपका ज्ञान कितना विस्तृत करने वाला सिद्ध होगा । आपको प्रतिदिन देश में घटने वाली प्रिय एवं अप्रिय घटना सुनने को मिलती है । भजन कीर्तन से आपका मनोविनोद

एवं अध्यात्मक भूख को शान्ति मिलती है। रामायण आपको आदर्श मार्ग दिखला रही है। ये सभी बातें इस प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र का सुचारू रूप से अर्थात् सही रूप में चलने का ही फल है। अतः हमें इसे सब तरह से सफल करने में श्री मोहन लाल एवं कमेटियों के संचालको का साथ देना चाहिए। ताकि वे आप लोगों की सेवा भली भांति कर सकें।

कल रविवार है। कल चारो कमेटियो के क्या-क्या कर्तव्य होगे यह आपको श्री मोहनलाल भली भांति समझायेगे। मैं थोड़ा सा इस पर प्रकाश डाल देता हूं। आशा है वह आप लोगो के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा मेरा कहना यह है कि हमारे पूर्वजों ने कहा है कि:—

पहिला सुख नीरोगी काया।
दूजा सुख घर में हो माया।
तीजा सुख पतिव्रता नारी।
चोथा सुख पुत्र आज्ञा कारी।
पांचवा सुख सुथान निवासा।
छठा सुख राज मे पासा।

अर्थात् सबसे पहिले हमें, हम नीरोग कैसे रहे इस पर ध्यान देना चाहिए। यदि हम बीमार है। तो

वाकी के दूसरे सुख हमारे लिए वेकार है। इस कारण प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह स्वास्थ्य सम्बन्धा नियमो का पालन अवश्य करें अत: स्वास्थ्य-सम्बन्धी कमेठी का कर्त्तव्य होगा कि वह उन सभी नियमों एवं कार्यो से महोल्ले वालो को अवगत कराये। जिससे महोल्ले में बीमारी आ ही नहीं सके।

"दूसरा-सुख है घर में माया।" इसका कार्य है कि यदि हम आर्थिक दृष्टि से अर्थात् रुपये पैसे वाले होंगे तो जीवन सुखी रहेगा। इस कारण आर्थिक समस्या ठीक करने वाली कमेटी का धर्म है कि वह महोल्ले में आर्थिक दृष्टि से जाँच कर के फीजूल खर्च को वंद करावे। तथा छोटे-छोटे घरेलू धंधे चलाकर लोगों के कमाने की शक्ति को वढावे। घरेलू धंधे क्या-क्या हो सकते हैं यह आपको अध्यापक जी एवं इससे सम्वन्धित कमेटी के सदस्य समय पर वतायेंगे।

तीसरा सुख है-घर में पतिवृता नारी का होना। अर्थात् हमारी मां-वहिने पढ़ी लिखि एवं अपने कर्तव्य को जानने वाली हो। यह समस्या देखने में कठिन प्रतीत हो रही है। पर यहाँ पर यदि शिक्षा-

प्रसार-कमेठी सही कदम उठायेगी । तो इस समस्या का सुलझना मुश्किल नहीं होगा । इसका कारण यह है कि शहर मे महिला-समाज सुधार कार्य भी चल रहा है । उनके कार्यकर्त्ता महिलाओं से मिलने पर वे माँ-बहिनों के पढने, सफाई से रसोई बनाने, घरों को साफ सुथरा रखने एवं शिशुओं के लालन-पालन सम्बन्धी ज्ञान एव साधन देने के लिए सहप तैयार हो जायेगी ।''

"चोथा-सुख है पुत्र आज्ञाकारी ।''

यदि बच्चों की मां पढी लिखी एव आदर्श महिला होगी तथा समाज का ढाँचा सुधरा हुआ होगा तो पुत्र एव पुत्री दोनों ही आज्ञाकारी एव सेवावृत्ति होंगे ।

पांचवां सुख बताया गया है—भले स्थान पर निवास हो । स्थान तो सभी भले हो सकते । जबकि इनमें बसने वाले सुसभ्य एव भले व्यक्ति हो । यदि आपके महोल्ले में सभी लोग आपकी चानेवाले होंगे । अर्थात् समाज के नियमों का पालन भली भाति करने वाले होंगे तो महोल्ला अपने आप सुस्थान बन जायगा । यदि उपरोक्त बातें महोल्ले में न होगी तो भला स्थान भी नरक बन जाता है ।

छठा सुख बताया—"राज में पासा।" तो अब राज तो आप लोगों का ही होगया है। यदि आप इमे सुचारु रुप से चलायेगे। तो यह सुख अपने आप आप लोगों का प्राप्त हो जायगा।

यह बात जो हमारे पूर्वज थोड़े से में ही कितनी महत्वपूर्ण बता गये है इसे हमे भूलना नहीं चाहिए। यह हमारा पूरा-पूरा पथ-प्रदर्शन कर रही है। इस वार्ता के बाद स्वामीजी सभी को आशीर्वाद देते हुए अपने आश्रम की ओर प्रस्थान कर गये।

प्रौढ़ छात्रों ने प्रार्थना की ओर अपने दैनिक कार्य मे सलग्न हो गये। एक सप्ताह में छात्रों ने स्वर एवं व्यंजनों का पूरा-पूरा ज्ञान नवीन प्रणाली द्वारा प्राप्त कर लिया था।

इस केन्द्र के संचालक श्री मोहनलाल का दावा था कि वह प्रतिदिन आने वाले छात्र को जो पूरी लग्न के साथ अध्ययन करता है। तो एक माह में प्रौढ़ों के लिए बनी पहली पुस्तक का पढ़ना सिखा सकता है।

उसने वर्णमाला का निम्न प्रकार वर्गो में बंटवारा कर लिया था.—

पहिला था- (ग वर्ग) इस वर्ग में वर्णमाला

करा कर–मात्रा–ज्ञान केवल दो दिन में ही समाप्त करा दिया ।

इनके साथ-साथ शिक्षा-विभाग द्वारा मिली पुस्तक 'नया सवेरा' अपने पढ़ाये वर्णों के अलावा साथ-साथ पढ़ाते रहे । उनका सुझाव था कि अंक-शिक्षा प्रौढ़ों के अपने अनुभवों को आधार मान कर दी जाय तो अधिक अच्छा रहे और प्रौढ़ों को उससे अधिक सफ़लता मिल सकती है ।

उनका कहना था कि अधिकांश प्रौढ़ों को गणित का रोज के लेन–देन का ज्ञान होता है । वे अपनी मजदूरी हिसाव करके लेते हैं । कुम्हार अपने वर्तन वेचकर हिसाव से पैसे लेता है । उसी तरह माली तथा मालिन साग वेचकर पैसे ले लेती है । किसान भी अपने खेत के अनाज का पूरा हिसाव कर सकता है । यदि कमी है तो यही है कि वे अपने हिसाव को अंकों में लिख नहीं सकते । अतः अध्यापकजी को अंक–सिखाकर उन्हें उनके दिन-प्रतिदिन में काम आने वाले हिसाव वतावें तो छात्र वहुत शीघ्र अपने घरेलू-काम-काज के हिसाव करना और उनको अंकों में लिखना सीख जायेंगे ।

उदाहरणार्थः—मान लो रामू प्रतिदिन मजदूरी

के पांच रुपये लेता है। एक हफ्ते के (७×५) अर्थात् ३५) रुपये मिलेंगे। रामू ७ दिनों के ३५) रुपये अपना हिसाब करके लेता है। इसमें कोई संशय नहीं है। अब उसे बताना है कि ५) इस तरह लिखे जाते हैं और ३५ इस तरह। इसी तरह दूसरे काम-काजी छोटे-छोटे लेखे-जोखे जो प्रतिदिन उनके व्यवहार में आ रहे हैं—आधार मानकर अंकगणित के जोड़-बाकी, गुणा तथा भाग सिखाये जांय तो शिक्षक को बहुत जल्दी सफलता मिलने की आशा है।

उन्होंने अपने केन्द्र में समाज-शिक्षा, और समान्य विज्ञान की भी मौखिक शिक्षा देने का कार्यक्रम बना रखा था। वह निम्न प्रकार था:—

इतिहास:—आर्य, रामायण के पात्र, महाभारत के पात्र, भारत के संत, नेता तथा वीरों की संक्षिप्त जीवन कथा।

भूगोल:—संसार का दिग्ग-दर्शन, महाद्वीपों के नाम, महासागरों के नाम, देशों के नाम, भारत के पहाड़, नदी, झीलें,-तीर्थ स्थान, बाँध, राजधानियां बड़े कल-कारखानों के नाम, उपज तथा आवागमन के साधनों का साधारण-ज्ञान।

नागरिक-शास्त्र:— लोक-सभा, विधान–सभा–जिला परिषद, पंचायत समिति, पंचायत ओर नगरपालिकाओं का साधारण–ज्ञान, मूल-अधिकारों का ज्ञान, मंत्री–मंडल, राष्ट्रपति, प्रधान-मंत्री, मुख्य मंत्री और मंत्रियों के कार्य–कलापों पर प्रकाश डालना:—

सामान्य–विज्ञान में शरीर रचना का ज्ञान, बीमारियों का व्यौरा एवं उनसे बचने का ज्ञान। सफाई का महत्व आदि पर प्रकाश डालना:—

अध्यापकजी ने दैनिक शिक्षण–कार्य-क्रम को निम्न प्रकार विभाजित कर रखा था:—

अक्षर-ज्ञान–	४० मिनिट
अंकों का ज्ञान	२० मिनिट
समाज-शिक्षा	१० मिनिट
स० विज्ञान	१५ मिनिट
	६० मिनिट

अक्षर-ज्ञान तथा अंकगणित के सिवाय सभी दूसरे विषयों का ज्ञान मौखिक खास करके कहानियों के रूप में ही दिया जाता था। प्रौढ तो यही जानते थे कि उन्हें मास्टर साहब कहानियां ही सुना रहे हैं। अतः बातों ही बातों में उन्हें आवश्यक तत्व का ज्ञान आसानी से दिया जा रहा था।

चूंकि अक्षर-ज्ञान तो प्रौढ़-शिक्षा का एक मुख्य अंग है । सम्पूर्ण प्रौढ़-शिक्षा नही । सम्पूर्ण प्रौढ़-शिक्षा में तो निम्न विषयों का ज्ञान भी अनिवार्य है:—

आर्थिक दशा का ज्ञान,

समाज—सुधार सम्बन्धी ज्ञान

स्वास्थ्य सुधार सम्बन्धी ज्ञान,

राजनैतिक-समस्याओं ' सम्बन्धी ज्ञान,

अत: स्वामीजी ने इस महोल्ले में पूर्ण प्रौढ़-शिक्षा का ज्ञान देते हुए ही—उक्त विषयो के ज्ञानार्जन हेतु च्यार कमेठियों का सर्जन करना अत्यावश्यक वताया। जिनका निर्माण भी अक्षर-ज्ञान-केन्द्र के साथ-साथ होना ही आवश्यक है । अत: यही सोचकर कमेठियों का निर्माण किया गया । अक्षर—ज्ञान के पश्चात् हरी कीर्तन एवं भजन बोलने की व्यवस्था होने के कारण वृद्ध-पुरुष भी भजन सुनने तथा हरी कीर्तन सुनने के लिए इस समय तक केन्द्र को नहीं छोड़ते थे और थोड़ा भोत अक्षर-ज्ञान भी प्राप्त करते रहते थे ।

देश-विदेश के समाचार भी अध्यापक महोदय बहुत ही सरल भाषा में पूर्ण व्योरे के साथ-अच्छी तरह समझाकर सुनाते थे । इस कारण भी केन्द्र में उप-

स्थिति बनी रहती थी।

इस प्रकार इस सरस्वती महोल्ले का प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र बड़ी सफलता के साथ चल रहा था।

बाधक-तत्व

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सत्य ही लिखा है कि दुर्जन-जन सदा दूसरे की उन्नति देखकर जलते हैं। यथा:—"जरें ही सदा पर सम्पत्ति देखी।" साधारण बोल-चाल में भी यह कहते हैं कि अधिकतर लोग दूसरे को सुखी देखकर ही दुःखी हैं। दुःखी देखकर नहीं।

हमारे इस प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र की सफलता भी दूसरे प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र-संचालकों की आंखों में खटकने लगी। भाग फूटेड़े को जैसे कर्म फूटेड़ो मिल जाता है। उसी तरह इस महोल्ले के भी कुछ ईर्षालु एवं स्वार्थी लोग भी उनको मिल गये। महोल्ले के कुछ पैसे वाले लोग जो इस महोल्ले के लोगों के खून को चूस रहे थे। इस केन्द्र द्वारा स्थापित आर्थिक—कमेठी की चपेट में आने लगे। इस कमेटी ने एक सहकारी-संस्था बनाकर महोल्ले को उसकी जरूरत वाली अत्यावश्यक वस्तुओं का एक सहकारी भण्डार

खोल दिया । जो सही कीमत पर आवश्यक वस्तुएें देने लगा । फलस्वरुप इस महोल्ले के दुकानोंदारों की मनचाही कीमत पर बेचने की शक्ति समाप्त होने लगी । उनमें घीसाराम खत्री तथा धन्नाराम गहलोत मुख्य थे । इन लोगों की दूकान इस महोल्ले में पिछले कई वर्षों से चल रही थी । इन थोडे से वर्षो में ही इन दोनों ने पक्के मकान बनवा लिए और हजारों रुपयों का माल दूकानों में रखने लगे । राशन से मिलने वाली चिणी इन गरीबों से यही दोनों खरीद लेते थे । बदले में दूसरी चीजे मन चाहे मूल्य पर उधार पहिले ही दे देते थे । ताकि वे चिणी किसी दूसरे को दे ही नही सके ।

पर अब स्वामीजी के सद् उपदेशों के फलस्वरूप तथा सहकारी भण्डार से सही मूल्य पर वस्तुऐं प्राप्त हो जाने के कारण–इन्होंने ब्लैक में चिणी बेचनी बंद कर दी । फलस्वरूप इन दोनों दूकानदारों को कम से कम ४००) मासिक की हानि होने लगी । लोग–बाग ने वस्तुऐं भी खरीदनी बंद कर दी । इससे और घाटा लगा इस घाटे ने उन्हें खोखला दिया । और वे इस प्रौढ शिक्षा केन्द्र के विरुद्ध कमर कशकर खड़े हो गये ।

इधर प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्रों के संचालकों की जो साप्ताहिक सभा होती थी। उसमें प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र सरस्वती महोल्ले की वढ़ती प्रौढ़-छात्र संख्या एवं प्रौढ़ छात्रों का थोड़े से समय में ही नया सवेरा पुस्तक समाप्त कर देने तथा छोटे-छोटे घरेलू काम के सवाल निकाल लेने की योग्यता की रीपोर्ट सुन-सुन कर दूसरे प्रौढ़—शिक्षा—केन्द्रों के कुछ इर्षालु संचालक जल उठे। उन्होंने भी यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस केन्द्र को ऐन—केन प्रकारेण समाप्त कराना ही होगा। क्योंकि इस प्रौढ़—साक्षरता केन्द्र के संचालक श्री मोहनलाल की कार्य कुशलता ने उनको श्री अपर निदेशक महोदय के सामने नीचा दिखा दिया। वे जो खाली—बातें वना—वनाकर के ही उच्च-अधिकारियों को प्रसन्न करते आ रहे थे। अव वे असफल होने लगे। साप्ताहिक—सभा में उनको नीचा भी देखना पड़ा। वे जो वढ़-वढ़कर बातें करते थे। वे झूठी सिद्ध होने लगी। उच्च अधिकारियों की नजरों से गिरने लगे। इन सभी अपमानों की जड़ में उन्हें श्री मोहनलाल लगा। उन्होंने एक दिन एक मत होकर यह निश्चय किया कि सरस्वती महोल्ले के लोगों से मिल कर श्री मोहनलाल को वहां

से खदेड़ देने का प्रयत्न करना चाहिए। सो न रहे बांस और न बाजे बांसुरी वाली कुहावत चरितार्थ हो जाय।

इन अध्यापकों में मुख्य थे श्री गडवड़ लाल खत्री उन्होंने कहा कि इस सरस्वती महोल्ले में एक दूकानदार मेरे मिलने वाला है। मैं उससे मिलकर कोई न कोई उपाय अवश्य कर सकूंगा। अतः उसके दूसरे साथियों ने उसे ऐसा करने के लिए कहा। और उन्होंने हर तरह से उसका साथ देने का वादा भी किया।

इसी कारण कुछ दिन वाद श्री गड़वड़ लाल खत्री श्री घीसाराम खत्री की दूकान पर आ बैठा। दोनों ही व्यक्ति खत्री थे। इस कारण थोड़ी देर में ही दोनों में दूर का रिस्ता भी निकल आया। इससे और घनिष्ठा वढ़ी। श्री घीसाराम ने अपने लड़के से कहा कि "मास्टर साहब के लिए चाय तो बनाओ' इसी दोरान में मास्टर साहव ने पूछा लिया "क्यों खत्री साहब दूकानदारी तो खूब चलती होगी।" खत्री साहव ने दुःख प्रकट करते हुए कहा—चलती तो खूब थी। पर अव तो खर्चा भी नही निकल रहा है।" इस पर मास्टर साहव ने आश्चर्य में

आकर पूछा:—"क्यों खत्री साहब इस कमी का क्या कारण हो गया।" खत्री साहब ने गहरी सांस लेते हुए कहा—"कारण तो ऐसा खड़ा हो गया है मास्टर साहब कि यदि बना ही रहा तो एक न एक दिन यहां से दूकान उठानी पड़ेगी।"

'दूकान उठानी पड़ेगी !" मास्टर साहब ने जोर देकर पूछा—"

"हां मास्टर साहब बात तो ऐसी ही है।" खत्री साहब ने दुःख भरे शब्दों मे उत्तर दिया।"

"आखिर बात है क्या ! बताओ तो सही ।" मास्टर साहब ने कुछ गम्भीर होकर पूछा।

खत्री साहब इधर-उधर देखकर धीरे-धीरे कहने लगे—"बात यह है मास्टर साहब कि इस महोल्ले में एक रात्रि पाठशाला खुली है। यह रात्रि पाठ-शाला ही मेरी दूकान का सनीचर बनी हुई है।

"रात्रि पाठशाला का आपकी दूकान से क्या संबंध है ?" मास्टर साहब ने आश्चर्य भरे शब्दों में पूछा।"

इस पर खत्री साहब कहने लगे—"बात यह है-मास्टर साहब इस प्रौढ़-साक्षरता केन्द्र के संचा-लक श्री मोहनलाल ने एक स्वामीजी की सहायता

से इस महोल्ले की काया ही पलट दी है । क्या बालक और क्या वृद्ध सबके मुंह से इस केन्द्र की ही चर्चा सुनाई पड़ेगी । इधर दिन छिपा । उधर केन्द्र पर लोगों की भीड़ लगने लगी । ७ बजते-बजते महोल्ले के सभी लोग-बाग केन्द्र पर पहुंच जाते हैं ।"

इस पर मास्टर साहब ने पूछा—"सभी लोग वहां पर जाकर क्या करते है ?"

खत्री साहब ने मुँह बना कर कहा—'पूछो ही मत इन दोनों ने ऐसा जाल बिछाया है कि–७ बजे से लेकर ११ बजे तक एक भी आदमी वहां से हटना नहीं चाहता ।"

इस पर मास्टर साहब ने आश्चर्य में पड़कर पूछा–"बताओ तो सही वह जाल है क्या ?"

"जाल यह है मास्टर साहब !" खत्री साहब ने कुछ और धीमें स्वर में कहा--"७ बजे से ८ बजे तक तो रामायण सुनाई जाती है । इसके बाद पढ़ाई फिर भजन-कीर्तन । सबके बाद समाचार-पढ़ कर सुनाये जाते हैं । इस तरह ऐसा जाल सा बिछा दिया है कि इसमें बड़ने के बाद शीघ्र ही निकला नहीं जाता । एक दो बार तो मैं भी इस चक्कर में पड़ गया था ।"

"तो इससे आपको क्या नुकसान है ?"-मास्टर साहब ने गम्भीर स्वरों में पूछा। इसी बीच चाय तैयार होकर आगई। श्री घींसाराम चाय का प्याला मास्टर साहब को देते हुए बोले—"बात यह है मास्टर जी श्री स्वामीजी ने श्री मोहनलाल की सहायता से पढ़ाई के अलावा-महोल्ला सुधार कमेठियां भी बनाई हैं। इन कमेठियों में एक कमेठी है—आर्थिक-समस्या सुधार कमेठी। उस कमेठी ने लोगों की माली हालत सुधारने के लिए कई कदम उठाये हैं। उनमें एक सुधार यह किया कि महोल्ले में एक सहकारी भण्डार की स्थापना कर दी। अब सभी लोग माल उसी भण्डार से खरीदने लगे। दूसरे सबसे बड़ी कमाई जो हम लोगों के थी वह थी ब्लैक से चिणी खरीद कर ब्लैक में बेचणी। वह कमाई अब बिलकुल ठप्प हो गयी। रामायण क्या सुनी सभी लोग धर्म परायण हो गये। क्या तो प्रत्येक व्यक्ति चिणी लेकर सीधा दूकान पर आता था। और आज यह हालत हो गई है कि दूकान की तरफ कोई मुँह तक नही करता।"

इस पर मास्टर साहब ने पूछा—"तो वे उस चिणी का अब क्या करते है।"

खत्री……"अब उन सबकी चिणी सहकारी भण्डार खरीद लेता है और जरुरतानुसार उन्हें देता रहता है। बाकी की चिणी की मिठाई बनाकर वेच दी जाती है। लाभ उपभोक्ताओं में बांट दिया जाता है। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति को अधिक लाभ होने लगा। और हमारी कमाई समाप्त हो गई।"

चाय का खाली प्याला रखते हुए मास्टर साहब ने कहा—"तब तो आपको बड़ा धक्का लगा।"

खत्री साहब ने बची चाय को मास्टर साहब के प्याले में डालते हुए कहा—"धक्का क्या लगा मास्टर साहब हम तो भिखारी होते जा रहे हैं। जी में तो ऐसी आरही है कि इस केन्द्र को आग लगा दूं। पर बस नही चल रहा है। करूं तो क्या करूं-बात ही ऐसी हो गई कि किसी से कह भी नहीं सकता। चोर की माँ घड़े में मुंह देकर रोने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। यह तो आप घर के ही आदमी आ गये—इस कारण जी का दुःख कहकर हल्का किया है। आप किसी को कहना मत। इस स्वामी का मुझे बहुत डर लगता है। अभी तक तो हम लोग यह पता नहीं लगा सके कि यह महाराज रहते कहाँ है। लोगों को कुछ दूर तो

जंगल की ओर जाते दिखाई पड़ते हैं। "वाद में पता नहीं कहां छाँई माँई हो जाते हैं। यहाँ के पुराणे विचारों वालों का तो कहना है कि यह कोई देवता है। क्योंकि उनको वात टालने की शक्ति किसी में भी नहीं है। इस पर मास्टर साहव ने पूछा—"क्यों खत्री साहव स्वामीजी से किसी ने पूछा नहीं कि महाराज आप कहाँ विराजते हैं।"

"सुना तो था कि लोगों ने पूछा था।" खत्री साहव ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

मास्टर······"तो उन्होंने क्या वताया।"

खत्री······। "उन्होने कहा भाइयों साधुओं का कौन सा स्थान होता है। साधु तो रमते राम होते हैं। साधुओं से स्थान पूछना भी अच्छी वात नहीं है।"

इस पर फिर कुछ और पूछने की हिम्मत किसी की नहीं हुई।

मास्टर······"क्या मोहनलाल ने भी नहीं पूछा।"

खत्री······"सुना तो ऐसा ही है कि मोहनलाल भी को पता नहीं है कि स्वामीजी कहां से आते हैं। आगे भगवान जाने।"

मास्टर······"तव तो मामला टेडा ही ।"

खत्री······"तभी तो मैं डर रहा हूं। नहीं तो कभी का सफाया करा देता। रुपये के बल से आज संसार में सब कुछ किया जा सकता है। पर यह मामला मुझे रुपयों से परे लग रहा है। इस कारण चुप बैठा हूं। अब आप की समझ में कोई उपाय हो तो बताइये। कुछ ले-देकर भी इस मोहनलाल को यहाँ से हटा सकें तो कुछ आशा बंध सकती है। क्योंकि स्वामीजी तो सप्ताह में एक बार ही घटे-दो घंटे के लिए आते है। बाकी का सारा का सारा कार्य यह मोहनलाल ही चलाता है।"

मास्टर······"आपने मोहनलाल को कभी टटोला नही ?

खत्री·······"कर्म तो सभी किये थे। पर वह तो हम लोगों से बात करने में ही पाप समझता है।"

मास्टर साहब ने आश्चर्य में आकर पूछा—"क्या कहा बात करने में पाप समझता है।"

खत्री साहब सिगरेट की राख झाड़ते हुए बोले-"हाँ, बात तो ऐसी ही है। एक बार मैंने किसी की मारफत उन्हें जीमने के लिए निमन्त्रण दिया तो। जवाब मिला कि काला बाजार करने वालों का अन्न मैं नहा खाता।"

मास्टर......"तब तो पूरा महात्मा बन बैठा है।"

खत्री......"हां, मास्टर साहब बात तो ऐसी ही है। क्या आप इन्हें नहीं जानते। सुना है यह दिन में किसी एक प्राथमिक शाला में पढ़ाते हैं।"

मास्टर......'जानता क्यों नहीं। मेरे सामने ही तो कल मास्टर बना है।"

खत्री......"तो यह हैं कौन।"

मास्टर......"यह है भोलाराम मोदी का लड़का जिसकी दुकान रेल्वे लायन के पास है। बड़े-पकौड़ी करके अपना गुजरान कर रहा है। बड़ी मुश्किल से इसको मैट्रिक पास करा कर अध्यापक बनाया है। बाप को तो इस से बड़ी-बड़ी आशा है। पर यह तो मुझे इन बातों को देखते हुए कहीं साधु बाबु ही बनता नजर आ रहा है।"

खत्री......"हाँ मास्टर साहब बात तो कुछ ऐसी ही जच रही है। इस महोल्ले की वह बड़ी लगन से सेवा कर रहा है। इस पर भी किसी के घर का पानी तक नही पीता। लड़के बड़ी कोशिश करते हैं इन्हें जिमाने की। पर कह देता है-"जिस दिन आप लोग अच्छी तरह पढ़-लिख लोगे और इस महोल्ले

खत्री······"तभी तो मैं डर रहा हूं। नही तो कभी का सफाया करा देता। रुपये के वल से आज संसार में सब कुछ किया जा सकता है। पर यह मामला मुझे रुपयों से परे लग रहा है। इस कारण चुप बैठा हूं। अब आप की समझ में कोई उपाय हो तो बताइये। कुछ ले-देकर भी इस मोहनलाल को यहाँ से हटा सके तो कुछ आशा बंध सकती है। क्योंकि स्वामीजी तो सप्ताह में एक बार ही घंटे-दो घंटे के लिए आते है। बाकी का सारा का सारा कार्य यह मोहनलाल ही चलाता है।"

मास्टर······"आपने मोहनलाल को कभी टटोला नही ?

खत्री······"कर्म तो सभी किये थे। पर वह तो हम लोगों से बात करने में ही पाप समझता है।"

मास्टर साहब ने आश्चर्य में आकर पूछा—"क्या कहा बात करने में पाप समझता है।"

खत्री साहब सिगरेट की राख झाड़ते हुए बोले—"हां, बात तो ऐसी ही है। एक बार मैंने किसी की मारफत उन्हें जीमने के लिए निमन्त्रण दिया तो। जबाब मिला कि काला बाजार करने वालों का अन्न मैं नहा खाता।"

मास्टर......"तब तो पूरा महात्मा बन बैठा है।"

खत्री......"हां, मास्टर साहब बात तो ऐसी ही है। क्या आप इन्हें नहीं जानते। सुना है यह दिन में किसी एक प्राथमिक शाला में पढ़ाते हैं।"

मास्टर......"जानता क्यों नहीं। मेरे सामने ही तो कल मास्टर बना है।"

खत्री......"तो यह हैं कौन।"

मास्टर......"यह है भोलाराम मोदी का लड़का जिसकी दुकान रेल्वे लायन के पास है। बड़े-पकौड़ी करके अपना गुजरान कर रहा है। बड़ी मुश्किल से इसको मैट्रिक पास करा कर अध्यापक बनाया है। बाप को तो इस से बड़ी-बड़ी आशा है। पर यह तो मुझे इन बातों को देखते हुए कही साधु बाबु ही बनता नजर आ रहा है।"

खत्री......"हाँ मास्टर साहब बात तो कुछ ऐसी ही जच रही है। इस महोल्ले की वह बड़ी लगन से सेवा कर रहा है। इस पर भी किसी के घर का पानी तक नही पीता। लड़के बड़ी कोशिश करते हैं इन्हें जिमाने की। पर कह देता है-"जिस दिन आप लोग अच्छी तरह पढ़-लिख लोगे और इस महोल्ले

मोहन भाई की सच्ची लगन के कारण और सच्ची सेवा के कारण ही यहां पर आता हूँ। मैंने कई दिन लगातार यह देखा कि इस प्रौढ़—केन्द्र में पढ़ने कोई नहीं आ रहा है। इस पर भी भाई मोहन नित्य सूर्योदय की तरह यहाँ पर अपनी गैस की लालटेनों सहित मुझे तैयार मिला। इस सच्ची लगन के कारण मुझे भी सोचना पड़ा कि साधुओं का तो धर्म है कि वे सत्य-मार्ग पर चलने वालों की सहायता करें। इसी से प्रेरित होकर मैं मोहन भाई के पास आ गया। अगर कोई मोहन भाई जैसा ही सच्ची लगन वाली पढ़ी—लिखी महिला, प्रौढ़—महिला-केन्द्र खोल दें तो मैं उस बहिन की भी सेवा के लिए तैयार रहूंगा। मेरे तो भाई—बहिन दोनों ही एक जैसे ही हैं। इस कारण मेरी भी आप बहिनों से यह प्रार्थना है कि आप मोहन भाई और शिक्षा—प्रसार कमेटी के सदस्यों से कहो। वे ही आप बहिनो के पढ़ाने की व्यवस्था करेंगे।"

इस पर श्री मोहनलाल ने खड़े होकर कहा—स्वामीजी मैं और शिक्षा-प्रसार कमेटी के सभी सदस्य इसके लिए बड़ी कोशिश कर रहे हैं। पर कोई भी महिला-अध्यापिका यहाँ प[illegible] राजी नहीं

मास्टर······"अच्छी बात है ।', किसी को यह तो पता चलेगा ही नहीं कि यह काम रुपयों से कराया गया है । यह कह कर मास्टर साहब चले गये ।

प्रौढ़ महिला-शिक्षा की माँग

रामायण की कथा समाप्त होते ही आज कुछ महिलाओं ने खड़ी होकर स्वामीजी से प्रार्थना की:- महाराज हमारे महोल्ले की बहू–बेटियां भी दो अक्षर सीखना चाहती है । आपने उस दिन फरमाया भी था कि घर में स्त्री पढी लिखी होणे से ही घर में विद्या का आगमन होता है । आपने मिनखा वास्ते तो स्कूल खोल दी । पर म्हां लुगाया वास्ते तो आज तक क्यूं ही को करियोनी ।"

इस पर स्वामीजी ने हँसते हुए कहा:—बहिनो ! आप लोगाँ रो कहणो तो सोलह आना सही है । पर यह दोष मेरा नही है । यह दोष है शिक्षा-प्रसार कमेठी का जिसने प्रौढ पुरुषों के लिए तो केन्द्र खोल दिया । पर महिलाओं के लिए कोई व्यवस्था नहीं की । मैं तो जैसा कि आप लोगों ने देखा है ।

मोहन भाई की सच्ची लगन के कारण और सच्ची सेवा के कारण ही यहां पर आता हूँ । मैंने कई दिन लगातार यह देखा कि इस प्रौढ़—केन्द्र में पढने कोई नही आ रहा है । इस पर भी भाई मोहन नित्य सूर्योदय की तरह यहाँ पर अपनी गैस की लालटेणों सहित मुझे तैयार मिला । इस सच्ची लगन के कारण मुझे भी सोचना पड़ा कि साधुओं का तो धर्म है कि वे सत्य-मार्ग पर चलने वालों की सहायता करे । इसी से प्रेरित होकर मैं मोहन भाई के पास आ गया । अगर कोई मोहन भाई जैसा ही सच्ची लगन वाली पढ़ी—लिखी महिला, प्रौढ़—महिला-केन्द्र खोल दे तो मैं उस वहिन की भी सेवा के लिए तैयार रहूंगा । मेरे तो भाई—वहिन दोनों ही एक जैसे ही हैं । इस कारण मेरी तो आप वहिनो से यह प्रार्थना है कि आप मोहन भाई और शिक्षा—प्रसार कमेठी के सदस्यों से कहो । वे ही आप वहिनों के पढ़ाने की व्यवस्था करेंगे ।"

इस पर श्री मोहनलाल ने खड़े होकर कहा:—स्वामीजी मैं और शिक्षा-प्रसार कमेठी के पांचों सदस्य इसके लिए वड़ी कोशिश कर रहे है । पर कोई भी महिला-अध्यापिका यहाँ पर आने को राजी नहीं

"मास्टर साहब प्रौ० महिला-शिक्षा-प्रसार के लिए हमें अब क्या व्यवस्था करनी चाहिए । हमें भय है कि अगले सनि तक यदि हम कोई प्रौ० महिला—केन्द्र की व्यवस्था न करा सके तो गुरुदेव नाराज होंगे ।"

"बात तो सत्य ही है ।" मास्टर साहब ने उनके पास बैठते हुए कहा ।

"तो आप हमें मार्ग बताइये ।" सभी ने एक स्वर से कहा । "मार्ग तो यही है भाइयों !" मास्टर साहब ने अलसाई हुई आवाज मे कहा:—"कि आप लोग—पड़ोस वाले महोल्ले में चलने वाली माध्य—मिक शाला की अध्यापिका सु श्री ज्ञानवती देवी से प्रार्थना करिये । वही एक ऐसी अध्यापिका है । जो आ गई तो फिर काम पूरा करके ही हटेगी ।" उसके पास अपने में से किसी को नही जाना चाहिए। जानी चाहिए अपने महोल्ले की २-४ वृद्ध महिलाएं। जब वे जाकर कहेगी तो वो ना नही करेगी । वैसे वो बड़ी उदार विचारों वाली महिला है । पर फिर भी पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का जाकर कहना अधिक अच्छा रहता है ।" इस पर शिक्षा-प्रसार कमेठी के अध्यक्ष श्री रामदेव गहलोत ने कहा—"आपने बहुत

अच्छी बात बताई मास्टर साहब । औरत के पास तो औरत ही जानी चाहिए । मैं कल मेरी मां और दो–तीन दूसरी लुगायाँ ने जरूर–जरूर ज्ञानवती बहिन जी के पास भेज देय्यूं ।"

इसके पश्चात् इस दिन का कार्य–क्रम पूरा हो गया । सभी कार्यकर्त्तागण अपने–अपने घरों की ओर चले गये ।

सु. श्री ज्ञानवती

सु श्री ज्ञानवती श्री मदनचन्द गोस्वामी की लड़की है । यह पांच फीट लम्बी एक बलिष्ठ शरीर वाली महिला है । इसके शरीर का रंग गेहूंआं और चहरे पर चेचक के दाग हैं । पर दागों के कारण इनका चहरा भद्दा होने के बजाय अधिक सुन्दर दिखाई पड़ने लगा है । मैट्रिक तक की शिक्षा लेने के बाद यह अध्यापिका बन गई और कोई ४–५ वर्षों से यही कार्य करती आ रही है । यह अभी तक कुंवारी है और कुंवारी ही रहने का इसका विचार है। उसका कहना है कि वह शादी करके जन–संख्या बढ़ाना नहीं चाहती । और न अपने पिता को अकेला छोड़ना चाहती । क्योंकि उसकी मां जिन्दा नहीं थी ।

श्री मोहनलाल का मकान भी गोस्वामियों के महोल्ले में होने के कारण वह उसे जानता है और सदा उसे अपनो सगी वहन के समान ही आदर देता रहा है । उसे विश्वास था कि इसके आने से प्रौढ़-महिलाओं का केन्द्र चल निकलेगा । इसी कारण उसने श्री रामदेव को प्रयत्न करने के लिए कहा था ।

दूसरे दिन श्री रामदेव की मा अपने महोल्ले की दो—तीन दूसरी महिलाओ को साथ लेकर पूछती पूछती सु० श्री ज्ञानवती के मकान पर जा पहुंची । ज्ञानवती शाला से आकर वैठी ही थी कि उसके द्वार पर खट—खट के आवाज होने लगी । वह उठी और द्वार पर गई । कींवाड़ खोलने पर उसने देखा कि द्वार पर ४ औरते खडी है । उसने वड़ो मीठी वोली में कहा—"माताजी अन्दर आ ज्याओ ।"

श्री रामदेव की माँ सहित चारों महिलाएं सु श्री ज्ञानवती वहन के घर मे आकर-वरशाली में ज्ञानवती के हजार मना करने पर भी नीचे ही वैठ गई ।

ज्ञानवती ने पूछा—'गर्मी पड़ रही है प्यास तो लगी ही होगी माताजी" क्या जल लाऊँ ? इस पर रामदेव की माँ ने सिर हिलाकर जल पीने की स्वी-

कृति दे दी । जल पी लेने के पश्चात् । ज्ञानवती वहिन ने फिर बड़ी ही मीठी और नम्रता से भरी वाणी में पूछा—"कहो माताजी आज इधर पधारने का कष्ट कैसे किया ?

इस पर रामदेव की माँ नेकहा—"आई तो वहनजी काम से ही हूं ।"

"तो फिर कहोनी ।" ज्ञानवती वहन ने तपाक से कहा । कुछ सभल कर बैठती हुई रामदेव की मा ने कहा—"वात आ है वहनजी म्हारे महोल्ले में पुरुषां वास्ते तो मदरसो खुलग्यो । पढ़ाई भी अच्छी होवे है । राम को नाम भी ले है। पर म्हांने पढाणे री कोई वन्दोवस्त को होयोनी । म्हे भी चावा हां कि दो आखर सीखल्या । मिनख जमारो वार-वार थोड़ो ही मिलसी । थोड़ी घणी पढल्यां तो गीता रामायण रो पाठ तो कर होल्यां । सो वहन जी आपरी कृपा हो ज्याय तो म्हे भी मीनख की जुणी में आ ज्यावां । राम जी थारो भलो करसी । और म्हे भी आपरो गुण कदेई भूला कोनी ।"

इस पर ज्ञानवती वहन ने कुछ गम्भीर होकर पूछा—माताजी आप लोग कौन से महोल्ले में रहती है ।

रामदेव की मां–"महोल्ला सरस्वती में रहती हैं।" इस पर ज्ञानवती बहन ने कुछ सोचकर कहा–यह वही महोल्ला है कि जहां पर भाई मोहनलाल मोदी पढ़ाता है।"

हां बहनजी यह वही महोल्ला है।" रामदेव की मां ने सिर हिलाते हुए कहा–

इस पर ज्ञानवती बहन ने फिर प्रश्न कर लिया–तो मेरा नाम भी आप लोगों को उसी ने बताया होगा। "हां बहनजी आपका कहना सही है।" उसने फिर सिर हिलाकर स्वीकार किया।

इस पर थोड़ी देर सोचकर ज्ञानवती बहन ने कहा—"अच्छी बात है माताजी मैं एक–दो दिन में सोचकर जैसा विचार होगा भाई मोहन के साथ संदेशा कर दूंगी।"

इस पर उन चारों ही महिलाओं ने आंचल बिछा कर कहा–"नहीं बहनजी म्हे तो खाली नहीं जायेंगी। म्हारे साथे तो चालणो ही पड़सी। म्हे बड़ी आशा लेयर आपरे कने आई हां। भगवान आपरो भलो करसी।"

इस पर धर्म संकट में पड़ती हुई ज्ञानवती काफी देर तक सोच–समझकर कहा:—"ठीक है माताजी

मैं आप मां बहिनों की सेवा करने अवश्य आऊँगी।"

"बेटी भगवान थारो भलो करसी । म्हारी आणे री लाज राख दी।"

कुछ देर तो शान्त रही पर थोड़ी देर बाद ज्ञानवती बहन ने पूछा—माताजी वहां पर मैं किस स्थान पर पढ़ाऊंगी । कितनी मां—बहिने पढ़ने आयेगी । समय कौन सा होगा । आदि—आदि बातें भी जाननी जरूरी है।"

इस पर रामदेव की मां ने कहा—"यह सारी बातें बेटी श्री मोहनलाल से ही पूछ लोगी तो अच्छा रहेगा। मोहनलाल जिस तरह चासी-उसी तरह की व्यवस्था हो ज्यासी। पढाणे वास्ते हूं म्हारे घर मैं एक कमरो खोल देस्यूं । पाणी भी हूँ म्हारे घर हूँ पास्यूं । ओर भी छोटी-मोटी चीजां जकी भी चाई जसी । हूँ देस्यूं । हूँ थारेहुं वादो करहूँ कि हूँ थाने म्हारी जायेड़ी बेटी हूं बेसी समझ स्यूं । थाने की ही बात रो फोड़ो पड़न को देऊंनी ।

श्री रामदेव की मां की यह सत्यभरी बातें सुनकर ज्ञानवती बहन का हृदय पसीज उठा । क्यूंकि उसकी मां बहुत पहिले ही स्वर्ग सिधार गई थी । एकाएक बेटी के नाम का सम्बोधन सुनकर उसका हृदय

रसोई में गई और मोहन की मां के हाथ से बेलन छीनती हुई बोली:—"मां रस तो तुम्हीं निकालो। फुलके मैं तैयार कर देती हूँ। मोहन भाई को क्यों कष्ट दे रही हो।"

इतना कहकर वह फुलके बेलने लगी। मां रसोई से उठती हुई कहने लगी—"तो बेटी भोजन भी यहीं करना होगा।"

"भोजन करने तो आई हूं मां।" ज्ञानवती ने हंसी का फुंवारा छोड़ते हुए कहा।

"आई हो तो कोई दूसरा घर थोड़ा ही है बेटी। तुम्हारा ही तो घर है।" मोहन की मां दो की वजाय च्यार आम लेकर रस बनाने लगी।

इसी बीच मोहन जबकि ज्ञानवती उसकी मा से बात कर रही थी—साइकल लेकर वर्फ लाने चला गया था। मा ने जब आमों का रस निकाल लिया। तब महशूश किया कि वर्फ तो मंगाई ही नही। तो उसने मोहन को आवाज दी—

"बेटा मोहन"

—'हा मा क्या कह रही हो।"

—"बेटा बर्फ तो लानी भूल ही गये।"

—"नही मां भूला नही।" यह तो तैयार है।

—"शावास बेटा । इसी को तो सेवा करना कहते हैं । जब मां ने मन में सोचा । चीज तैयार ।

—यह सुन कर ज्ञानवती ने भी फुलके सेकते हुए कहा—क्या मां, मैं सेवा करने वाली नहीं हूँ । तुमने याद किया और मैं विना बुलाये ही भोजन करने आ ही गई ।"

—मां ने हंसते हुए कहा—"हां बेटी तू तो मोहन से भी अधिक सेवा करने वाली है ।" यह कहते हुए उसने अपने मन में सोचा—"कितना अच्छा रहे कि ज्ञानवती जैसी ही शुशील एवं पढ़ी-लिखी वहू घर आ जाय ।"

इसी वीच मोहन ने कहा —"मां भूख जोर से लग रही है ।"

मां ने कहा—"वैठो अब देरी क्या है ।"

मोहन और ज्ञानवती दोनों ही जब भोजन करने वैठ गये । तब भोजन परोसती हुई मोहन की मां ने ज्ञानवती से पूछा—क्यों बेटी रास्ता भूल कर आई हो या किसी कारण वस !

"आई तो मां काम से ही थी । झूठ क्यों बोलू' ज्ञानवती ने आमरस का मीठा स्वाद लेते हुए कहा ।

"तो कहो ना" मां आमरस और परोसते हुए कहा ।

आऊंगी मैं बेटी, तू क्यों डरती है। मोहन से अच्छा केन्द्र चलेगा तेरा।"

ज्ञा०-"तभी तो मां मैं खाना छोड़ कर तुम्हारी शरण आई हूं।

इस पर मोहन ने मुंह बनाकर कहा-मां ! तू मेरी सहायता करने तो नहीं आई।"

"तेरी सहायता को मैं पुरुषों में कहां आती। और फिर रात्रि में।" मां ने हँसते हुए कहा।

इस तरह बात-चीत करते-करते उन्होंने भोजन कर लिया। मोहन के घर में ज्ञानवती का आना जाना बाल्यकाल से ही था। ज्ञानवती की माँ जब वह ५ वर्ष की थी तभी स्वर्गवास सिधार गई थी। ज्ञानवती के पिताजी ने दूसरी शादी नहीं की-लोग-बाग कहते। तो कह देते-"दूसरी शादी से मेरी ज्ञान बिटिया को दुःख हो जायगा।" वे साधु प्रकृति के पुरुष थे। अधिक समय भजन---पूजन में ही बिताते थे। पूजा-पाठ से जो कुछ आमदनी होती थी। उससे बाप-बेटी का गुजारा चल जाता था।

उन्होंने ज्ञान को पढ़ाना तो और अधिक चाहा था। पर ज्ञानवती ने कह दिया "नहीं पिताजी अब मैं नौकरी करती हुई स्वयम् ही अध्ययन करती

रहूंगी। अब आप पर अधिक भार नहीं डालूंगी।

पिता ने ज्ञानवती की शादी करनी चाही थी। पर ज्ञान ने साफ-साफ कह दिया। "पिताजी जब तक आप हैं मैं शादी नहीं करूंगी। शादी करने पर आपकी सेवा मैं जैसी चाहती हूं वैसी नही कर सकूंगी। इस कारण मैं शादी नहीं करूंगी।" "और यही कारण था कि वह आज तक कुंवारी ही थी। अब उसे वेतन के इतने रुपये मिल रहे थे जिससे बाप—बेटी आराम से जीवन यापन कर रहे थे। जब ज्ञानवती छोटी थी तो वह अधिक मोहन के साथ ही खेला करती थी और मोहन की मां को मोहन की देखा देखी मां ही कहा करती थी। मोहन की मां एक सहृदय महिला होने के कारण इस बिना मां की बेटी को अपनी बेटी की तरह ही देखती थी। जब दोनों खेलते—खेलते भूखे हो जाते तो मोहन की माँ दोनों को ही दुपहरी करा देती थी। उसकी सिर चोटी भी मोहन की मां ही करती थी।

यही कारण था कि ज्ञानवती मोहन के घर आकर बिना किसी नहोरे के अपने घर की तरह खाना खाने लगी। मोहन की माँ का अब भी उस पर सगी बेटी का सा ही स्नेह था। हालांकि अब

रहूंगी। अब आप पर अधिक भार नहीं डालूंगी।
पिता ने ज्ञानवती की शादी करनी चाही थी।
पर ज्ञान ने साफ-साफ कह दिया। "पिताजी जब
तक आप हैं मैं शादी नहीं करूंगी। शादी करने पर
आपकी सेवा मैं जैसी चाहती हूं वैसी नहीं कर
सकूंगी। इस कारण मैं शादी नहीं करूंगी।" "और
यही कारण था कि वह आज तक कुंवारी ही थी।
अब उसे वेतन के इतने रुपये मिल रहे थे जिससे
बाप-बेटी आराम से जीवन यापन कर रहे थे।
जब ज्ञानवती छोटी थी तो वह अधिक मोहन के
साथ ही खेला करती थी और मोहन की मां को
देखा-देखी मां ही कहा करती थी। मोहन
की मां एक सहृदय महिला होने के कारण इस बिना
मां की बेटी को अपनी बेटी की तरह ही देखती
थी। जब दोनों खेलते-खेलते भूखे हो जाते तो
मोहन की माँ दोनों को ही दुपहरी करा देती थी।
...की सिर चोटी भी मोहन की मां ही करती थी।
यही कारण था कि ज्ञानवती मोहन के घर आकर
बिना किसी नहोरे के अपने घर की तरह खाना
खाने लगी। मोहन की माँ का अब भी उस घर
लगी बेटी का सा ही स्नेह था। हालांकि अब

स्वामीजी के बैठने के लिये एक ऊँचा मंच तैयार किया गया था । पुरुषों और महिलाओं के बैठने के लिये अलग—अलग व्यवस्था की गई थी । क्योंकि आज यहां पर अधिक उपस्थिति होने की सम्भावना थी । इसके मुख्य तीन कारण थे । पहला स्वामीजी का पधारना, दूसरा दिन का समय और तीसरा महो–ल्ले में जागृति आ जाना ।

शिक्षा—विभाग के उच्च अधिकारी वर्ग को भी निमन्त्रण दिया गया था । इसके अलावा इस नगर की प्रौढ़—शिक्षा समिति के सदस्यो के आने की भी सम्भावना थी ।

अत: इन सभी कारणों से प्रेरित होकर सजावट अच्छी से अच्छी बनाई जा रही थी । आर्थिक–दशा-सुधार कमेठी ने इस जलशे के खर्चे के लिए १००) स्वीकृत किये थे । इसके अलावा गोपाल भाई पर भी भगवान की मर्जी थी । ईश्वर ने उसे भी दो पैसे खर्चने को दे रखे थे । इस कारण वह भी अपने घर पर आने वाले अतिथियों की सेवा अपनी तरफ से भी करना चाहता था । फलस्वरूप चाय–पाणी की व्यवस्था गोपाल भाई की तरफ से थी ।

सु. श्री. ज्ञानवती वहन को पढ़ने वाली प्रौढ़-महि–

लाओं के नामों की सूची बनाएगी थी । इसके साथ-साथ उन छोटी लड़कियों की सूची भी बनाई थी जो इस महोल्ले में कन्या—पाठशाला न होने के कारण पढ़ नही रही थी । ऐसी लड़कियां भी कोई ४०—५० के करीब थी । प्रौढ़—छात्रा एवं छोटी बच्चियां सभी यथा स्थान बिठला दी गई थी । क्यों कि अब दो बजने ही वाले थे । ठीक दो बजे स्वामी जी महाराज दूर से आते दिखाई पड़े । लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई । वे सभी स्वामीजी की जै-जै कार के नारे लगाने लगे । स्वामीजी आज पहली बार ही दिन में आये थे । उनके सिर के बाल बिलकुल सफेद थे । दाढ़ी के बालों से सारी छाती ढकी हुई थी—

सफेद बालों के बीच उनका मुंह इस तरह लग रहा था कि मान लो चांदी के गत्ते के बीच सोने की तशवीर मंढी हुई हो । चेहरा बिलकुल गोरा था। चेहरे से वे कोई ३०—४० वर्ष की आयु वाले हो जच रहे थे । पर सफेद बाल ऊमर अधिक बतला रहे थे । वस्त्रों में एक भगवां चोगा पहिने हुए थे। हाथ में कमुण्डल था । एक हाथ में थी छड़ी । चेहरे पर वो ओज दमक रहा था कि किसी की भी नजर

उनके चेहरे पर एकाधक्षण से अधिक नहीं ठहर सकती थी । ज्योंहि वे गोपाल भाई के घर में आये सभी लोगों ने खड़े होकर उनका जैं-जैं कार के साथ भावभीना स्वागत किया । महिलाओं ने तो अपने मस्तक जमीन पर टेक कर अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

स्वामीजी महाराज के आसन पर बिराजते ही श्री मोहनलाल ने जो इन सभी कमेठियों का मंत्री था खड़े होकर कहना प्रारम्भ किया.—

"श्रद्धेय स्वामीजी, आदरणीय आगन्तुक बन्धुओं एवं भाई-और बहिनों । आज का दिन इस महोल्ले के लिये अत्यधिक महत्व का है । क्योंकि आज इस महोल्ले में प्रौ० म० के० का उद्घाटन हो रहा है। इस प्रौढ़-महिला शिक्षा—प्रसार—केन्द्र को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है । इसके लिये महात्मा शेखशादी के कहे शब्द में आपको सुना रहा हूं-एक बार महात्मा शेख शादी से किसी ने पूछा था कि बालक को शाला में पढने के लिये किस ऊमर में भेजना चाहिये । तो उन्होने फरमाया था कि उनके जन्म से बीस वर्ष पूर्व । अर्थात् उसकी मा पढी-होनी चाहिये । जिस बालक-बालिका की मां लिखी नही है तो उनकी शिक्षा अधूरी रहेगी।

बालक या बालिका की पहली शाला मां है। यदि मां पढी—लिखी हो तो उस मां के बालक सुस्कृत होंगे। उसके घर में सफाई एव स्वच्छता सभी स्थलों पर मिलेगी।

"पहिला—सुख नीरोगी काया" जो स्वामीजी का पहिला नारा है। उसका उसी घर मे ही पूरा—पूरा ध्यान दिया जायगा। इसलिये घर में मा—बहिने पढ़ी—लिखी ही होनी चाहिये। यदि घर में मा—बहिने पढ़ी—लिखी नहीं है तो उस घर में इस नारे का असर जितना होना चाहिये उतना नही होगा।

आज उसी मूलभूत कमी को दूर करने के लिये ही इस केन्द्र की स्थापना करने जा रहे है। अब मैं आप लोगों का अमूल्य समय अधिक न लेकर स्वामीजी महाराज से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने बचनामृतों द्वारा इस केन्द्र का उद्घाटन करने की कृपा करे।

स्वामीजी महाराज जब उठने लगे तो सभी ने प्रार्थना की कि महाराज आप बैठे—बैठे ही आशीर्वाद देवें।

इस पर स्वामीजी ने बैठे-बैठे ही बोलना प्रारम्भ किया—

भाई और बहिनों! आज मुझे अपार हर्ष हो रहा

है कि मुझे इस महाल्ले के भाई— वहनों ने इस पुनीत कार्य में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया। यह मेरा दूसरा अवसर है, जबकि इस महोल्ले में शिक्षा-प्रसार-केन्द्र का उद्घाटन कर रहा हूँ। पर इस अवसर को मैं इस कारण अधिक महत्वपूर्ण समझ रहा हूँ। क्योंकि सब शिक्षा की जड़ मां—वहिनें है। जब तक मां-वहिने सुशिक्षित न होगी—हमें किसी भी पहलु में पूर्ण सफलता नही मिलेगी। मेरा यह नारा—पहिला सुख नीरोगी काया।" तो पूर्णतया मां—वहिनों की शिक्षा पर ही आधारित है। जब तक मां-वहिने पढी—लिखी न होगी वे स्वास्थ्य सम्वन्धी नियमो से विल्कुल अनजान रहेगी। जैसा कि मैं आज तक इन घरों मैं देखता हूं। कोई भी मां—वहिन अपने भाई, पुत्र तथा पति को वीमार करना नही चाहती पर अनजान में वे आज करती जा रही है। क्योंकि उन्हें पढी—लिखी न होने के कारण-स्वस्थ्य रहने के लिए क्या-क्या करना चाहिए उन बातों को विलकुल ज्ञान नहीं है। मक्खियां, बासी—भोजन, सड़ा गला—भोजन, वर्तनों की सफाई रसोई घर की सफाई, रसोई करने वाली के वस्त्रों एवों हाथों की सफाई आदि का ज्ञान इन्हें बिलकुल

नही है और ये ज्ञान उस समय तक वे नहीं जान सकेंगी जब तक पढ़ी-लिखी न होगी । इसी कारण मैं इस केन्द्र को पहिले केन्द्र से अधिक महत्व दे रहा हूं ।

मैं यह बात और अधिक स्पष्ट कर देता हूं कि ये प्रौढ महिला या पुरुषों के केन्द्र चलाने मामूली बात नहीं है । क्योंकि इनमें पढ़ने वाले व्यस्क होते है । जब तक उन्हें प्रत्यक्ष रूप में कोई लाभ नजर नहीं पड़ेगा वे इसमें अधिक दिन नहीं ठहर सकेंगे । इस कारण इन केन्द्रों को ऐसा रूप देना चाहिए जो उनकी इच्छा के अनुसार हो—अर्थात् तत्काल--फल देने वाला हो सके। उदाहरणार्थ आपका पहिला शिक्षा-प्रसार केन्द्र आपके सामने है । इस केन्द्र को खुले अधिक समय नहीं हुआ है । पर इस केन्द्र के सचालक श्री मोहनलाल के अथग परिश्रम एवं लगन के कारण आज पूरा—का पूरा महोल्ला केन्द्र की ओर आकर्पित हो रहा है । क्योंकि उसमें कोरा अक्षर ज्ञान ही नहीं दिया जाता है । उसमें वो बातें भी सिखाई जा रही है जो उनके लिए अत्यावश्यक ही नहीं अनिवार्य है । आज वो केन्द्र उनके लिए जीवन–स्रोत का बना हुआ है । जैसे, सबसे पहिले

उपभोक्ता-भण्डार को ही ले लीजिए। उसके खुल जाने से इस महोल्ले को कितना लाभ हो रहा है। जो मुनाफा एक या दो व्यक्ति उठा रहे थे। अब सब का हो गया है। अल्प बचत प्रसार को ले लीजिए सभी के खाते खुल गये हैं और सभी के पास १ रु० से लेकर १००) रु० तक जमा हो गये हैं। फिजूल खर्चों को छुड़ाने में भी यह केन्द्र कम सफल नही हुआ है। बीड़ी—सिगरेट, शराब, सीनेमा देखना, जूआ—आदि सभी दुर्व्यसनो को छुड़ाने मे इस केन्द्र ने अपना अच्छा प्रभाव दिखाया हैं। महोल्ले की सफाई आपके सामने है। कितना—साफ-सुथरा है यह महोल्ला। आज से ३ माह पूर्व इसमे जगह—जगह कूड़े-कचरे के ढेर—के-ढेर लगे हुए थे। पर आज वही कूड़ा-कचरा खाद का काम दे रहा हैं और इनकी बाड़ियो में दूनी से दस गुनी तक उपज बढा रहा है।

चूंकि यह प्रत्यक्ष लाभ जब महोल्ले वालों को मिल रहा है तो भला उनका यह शिक्षा-प्रसार-केन्द्र बंद कैसे हो सकता है। हमारा प्राचीन भारत विश्व का गुरू रहा है। हमें उस युग के महापुरुषों एवं विदुषियों के जीवन चरित्र का अध्ययन भी करना चाहिए जो हमारे पवित्र-ग्रन्थ—रामायण-महाभारत

में भरे पड़े हैं । इस कारण धार्मिक चर्चा तो आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है । मैं इस केन्द्र की संचालिका वहिन से प्रार्थना करता हूं कि वह इस वात को भूले नहीं । अपने केन्द्र मे धार्मिक चर्चा को पहल दे और उसे अनिवार्य रखे । हम धर्म निष्ट हैं । धर्म की जहां वात आती है हम उसके आगे झुक ही जाते हैं । दूसरा आवश्यक पहलु है आर्थिक दशा—सुधार हमारे घरों में अनेक प्रकार की धर्म के नाम पर कूरीतियां खास कर महिलाओं में अधिक प्रचल्लित हैं । उन्हें भी उनसे होने वाली हानियां दिखा कर वंद करानी है ।

कताई, बुनाई, सिलाई आदि का ज्ञान भी इस केन्द्र में अनिवार्य रूप से चलना चाहिए और वह अर्थ-लाभ देने वाला हो । जब तक दो—पैसों की प्राप्ति न कर सकेंगे इस महँगाई के युग में हमारा काम ही नही चलेगा । अपने घर के वस्त्रों की सिलाई कर लेने से भी घर में बचत हो सकती है । स्वीटर, मौजे, गंजी आदि बुन करके भी दो पैसे प्राप्त किये जा सकते हैं । इसी तरह दूसरे ऐसे कार्य जिनसे हम कुछ न कुछ प्राप्त कर सकें । अवश्य सिखाने चाहिए। कहते है कि जापान का प्रत्येक घर छोटा—मोटा

इणै वास्ते म्हारो तो आ ही प्रार्थना है कि आप सरकार ही जवाबो हुकम देवो कि काल हूं या अठै ही म्हारी स्कूल चला दे ।''

स्वामीजी री सलाह इंस्पैक्टर साहिबा नै सही स्वीकार कर ली और वो ही ज्यान खड़ी होयर-बोली—

''भाई और बहिनों ! मनै बड़ी खुशी है कि आप लोग आपरी बेटयां नै पढाणै वास्तै लड़क्यां री स्कूल री मांग कररह्या हो । मांग ही को कर रयानो स्कूल वास्ते श्री गोपालरामजी आपरो मकान भी देण नै तैयार है । आं सगला हूं ऊपर है स्वामीजी महाराज रो आदेश । इणै कारण मैं ज्ञानवती बहन नै कहूं हूं कि वो काल सवेरै हूं ही इणै मोहल्ले में कन्या पाठशाला खोल ले ।''

स्कूल खोलणै रो नाम सुणताई सगला-भाई बहना ताल्यां—बजाय र आपरी खुशी दिखाई—इणरै बाद राष्ट्र—गायन हुयो और सभा समाप्त हो गई ।

सरस्वती महोल्ले में महिला-जागृति

"जद भगवान नै देणो होवै तो छप्पर फाड़र ही दे देवै।" आ कहावत इयै महोल्ले वालां रै वास्तै सवा सोलह आना खरी उतरी—आगलै ही दिन ज्ञानवती बहन सूरज निकल नै हूं पहल्या ही महोल्ले में जा खड़ी हुई।

महोल्ले वाला तो तैयार हा ही। गोपाल भाई रै कमरे में कन्या पाठशाला खुलगी।

बालिकाओं नै पढाणे में तो कोई सोच-फिकर री बात कोहीनी। पण बड़ी लुगायां ने पढाणी कोई मामूली बात को हैनी इयै वास्तै वीं रात नै ही ज्ञानवती बहन मोहन रै घरे जायर प्रौढ़ महिला केन्द्र रो कार्य-क्रम बणा लियो। जिको नीचै लिख्ये मुजीब है:-

प्रौढ़ महिला केन्द्र रो समय दिन में १ वजे हूं ४ वजे दिनतांई रो रहसी। ओ तीन घंटा रो समय नीचै लिखे मुजब काम में लियो जासी:—

१-०० से १-०५ प्रार्थना—

आसानी हूं चाल सकै है ।

प्रौढ़—महिला—शिक्षा—प्रसार केन्द्र में भणी-जण वाली महिला कनै हूं ही-रोजीना एक घंटे तांई ऊपर लिखेड़ा कामां में हूं कोई एक काम करावैं तो आशानी हूं केन्द्र रो खर्च और महिलाओं नै सहायता मिल सकै है ।

माल री बिक्री पुरुषां रै केन्द्र में पढणैं वाला भला आदम्यां रै जुमै कर दी जाय । तो माल आशानी हूं बिकतो रहवै ।

गांव री या महोल्ले री सहकारी समिति भी शिक्षा—प्रसार—केन्द्रों में बणेड़े माल नै खरीद सकै है और बीने आगै-पाछै भेजर फायदो उठा सकै है।

मूल बात आ है कि प्रौढ़ों री पढ़ाई रा केन्द्र चलाणै वास्ते बामें हाथ रो काम अनिवार्य रूप में होणो चाहीजे । तिकैं हूं प्रौढ़ आपरी आजीवका बढा सकै ।

अह सारी बातां भाई मोहन, बहन ज्ञानवती और मोहन री मां नै रात नै २ घंटा तांई गहरे सोच विचार करने रे बाद तह करी ।

—:०:—

शिक्षा-प्रसार-केन्द्र का उद्योगीकरण

अगले दिन भाई गोपाल रै घरै महोल्लेरी बूढी वडे़री सारी ही लुगायां री एक मीटिंग राखी। इये मीटिंग में भाई मोहन री मां भी सामिल हुई।

सगला हूँ पहल्यां भाई मोहन री मां ने आ बात सगली ही लुगाया नैं बताई कि "पल्यां पेट पूजा पाछै काम दूजा"। अर्थात् "भूखे भजन न होय गोपाला। यह लो थारी कंठी माला।" म्हारै कहणै रो मतलब ओ है कि पढ़ाई रो काम तो आपां जद ही कर सकस्यां जद घर में वखतरा दाणां वापरता रहसी। पहल्यां आपा नैं दाणां कानी ही घ्यान लगाणो पड़सी। इये वास्ते म्हारो ओ कहणो है कि आपणी पढ़ाई री स्कूल इसी होणी चाहिजे जिकी में पढ़णे रे साथै साथै दो पीसा री आमदनी भी होती रहवै। इण स्यूं दोनू घर बस्ता रहसी। अर्थात् पढ़ाई होती रहसी और दाणां वास्ते दो पीसां री मजूरी भी वणती रहसी।

जिका साक्षरता केन्द्रां में पढ़ाई रै साथै साथै हाथ

री काम भी चालू रहसी—वांरो समय भी ज्यादो रासणो पड़सी । इंरे अलावा घरां हूँ ही काम करा-यर ल्याणो और पड़सी । जदि इसी तजवीज बैठज्याय तो आपणो शाक्षरता केन्द्र कदेई बन्द को होवैनी और इनै कोरै कनै हूं सहायता लेणेरी जरुरत भी को पड़ैनी ।

अब रही बात आ कि आपां हाथ रो कुण सो काम आपणे केन्द्र में चलावां । जिण सूं आपा नें घणी हूँ घणी आमदनी होती रहवै ।

काम या धंदे रो चुणाव करणे हूं पहल्यां अह बातां देखणी घणी ठीक रहसी कि:—

(१) जिको धंदो आपा चालू करां हां वीरै माल री मांग है या नहीं । जदि मांग थोड़ी होसी तो काम पार को पड़ैनी । इयें वास्ते आपाने वो ही धंदो अपणाणो है जिके री मांग घणी हू घणी होवे ।

(२) दूसरी बात आ है कि आपा ने पहल बीं धंदे ने देणी है जकैं ने आपां घणे हूँ घणो आछो कर सका हां । जदि माल फूटरो और टिकाऊ नहीं है तो लोग वीने मोल को ल्यैनी । आछै माल ने दो पीसा ज्यादा देयर ही ले लेवै है । इयें वास्ते आपा ने पहल वी धंदे ने देणी चाइजै जिके नै आपां हर

तरह हूँ आछो बणां सका । इये हूं दाम आछा मिले और साथ-साथ में नाम भी आछो हो ज्यावै ।

(३) जिको धंदो करां वीने इमानदारी हूँ करां और वीरो पाई-पीसे तांई खरो हिसाव केन्द्र री बहया मे लिखेड़ो राखां । तिकै हूं कोई आपणे काम कानी आंगली न उठा सकै ।

(४) हाथ रो काम वी महिला कनै हूँ करास्यां जिकी आपणे साक्षरता केन्द्र की छात्रा होसी । तिकै हूँ महोल्ले री सारी महिलाएं ही आपणे साक्षरता केन्द्र में पढ़ण ने आण लाग ज्यासी । कारण केन्द्र मे आणे हूं बां ने हाथ रे काम हूँ महीने में घर खर्च रै वास्ते थोड़ी घणी रकम भी मिलती रहसी । आज इं महगाई रे जमाने में पढ़ण हूं घणी जरूरत कमाई करणे री है तिकै हूं घर रो धाको चिकतो रहवै ।

(५) हाथ रो काम प्रारम्भ करने शारू जदि जरु-रत समझी जाय तो थोड़ी-घणी रकम वैंक हूं भी उधार मिले है । सो आपां भी आपणे केन्द्र में हाथ रो काम शुरु करणे शारू जरूरत पर बैंक हूं रुपया उधार लेयर एक वार काम शरू कर देस्यां । इये वास्ते रकम री भी चिन्ता करणी कोहैनी ।

अब आज आपां ने म्हारी बतायेड़ी वातां पर

आछी तरह सोच-विचार र एक हाथ रो काम आपरो इये-शिक्षा प्रसार केन्द्र में शरू करणो है। इतरो कहयर भाई मोहन री मां बैठ गई।

इये पछै आपस में सलाह कर र और नफै-नुकशान कानी भी आछी तरह विचारणे रै पाछै महिलाओं री इये कमेठी ने पापड़ां रो काम शरू करणे री ही सोची।

क्योंकि इये काम ने सारी ही महिलाएं आशानी हूं कर सकै ही और पापड़ां री मांग भी घणी है। इयेरे साथे—साथे मूंगड़ी मोगर और हुवेजी भी केन्द्र में तैयार होणे लागगी—

उद्योगीकरण हूं केन्द्र चमक उठ्यो। महोल्ले री तमाम महिलाएं आर्थिक सहायता-मिलणे रे कारण पढण लागगी—

पापड़ों की मांग इस केन्द्र की इतनी बढ़ी कि—तमाम महोल्ले के घरों में रात—दिन पापड़ वटोजण लागग्या।'

मांग बढ़णे का कारण यह था कि माल खरा और उचित मूल्य पर वेचा जाता था। एक रुपये से हजार रुपये का माल लेणे वालों के साथ एक सा ही व्यवहार होता था। इस कारण इस केन्द्र को

शाख सब जगह जमगी। फलस्वरूप इस केन्द्र ने बीकानेर प्रौढ़—शिक्षण समिति से सहायता लेणी बन्द कर दी। केन्द्र अपने पैरों पर ही खड़ा नहीं हुआ। महोल्ले के तमाम स्त्री-पुरुषों में स्वावलम्बी बणने की भावना जागृत करदी—

इस महोल्ले की सहकारी समिति ने अगले थोड़े ही महीनों में इन दोनों केन्द्रों के उद्योगीकरण के कारण मालदार बणने लग गई। फलस्वरूप महोल्ले के लोग-बाग अपनी सहकारी-समिति से ही माल खरीदने लगे और बेचने लगे। कारण इसका लाभ उनका अपना लाभ था। यह याद रखो सहकारी समिति तभी लाभ उठाती है जब उसके कार्यकर्त्ताओं को भाई मोहन और बहन ज्ञानवती जैसे इमानदार, करमठ और लगन के सच्चे शिक्षकों से मार्ग दर्शन होता रहे।

स्त्री-शिक्षा

यह खासतौर पर देखने में आता है कि यदि किसी महिला का विरोध और बुराई किसी ने की हो तो उन करने वालों में महिला खासतौर से होगी। कहने

को दहलाने वाली प्रथा है। इधर तो घर में से वह व्यक्ति उठ जाता है जो घर के सब प्राणियों का सहारा था। वे सब उसके लिये बुरी तरह रो रहे हैं। इधर पंच लोग भलेही इस घर में एक समय का ही अनाज न-हो ओसर करने पर जोर डालना प्रारम्भ कर देते हैं और अन्त में उस रोणे—कूकणे में ही बिना हया—दया के उसी के आंगन में मिठा भी मंगवाकर खाते हैं। ओसर में भोजन करने वाली और राक्षसो में कोई अन्तर नही है। यदि किसी को अपने मा-बाप की याद कायम रखनी हो तो शाला-भवन, कूआ, बावड़ी आदि बनवाकर रखे। ओसर करके इस राक्षसी रिवाज को मानकर नही।

इसी तरह औरतो में पुरुषों की अपेक्षा अधिक अंध विश्वास होने के कारण औरतों को चाहिये कि वे आज के इस विज्ञान के युग में टूंणा—टोटका। और बरत—बड़बूलो पर से विश्वास हटा ले।

इस तरह कई महीनो तक प्रचार के कारण इस महोल्ले में सत-प्रतिसत तो नही पर अधिकाश महिलाओं में आत्म-विश्वास की भावना जागृत हो उठी अंध विश्वास मिटने लगा। सफाई और स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का तो इतना सुधार हुआ कि वर्षा

ऋतु में भी रसोईघर तो दूर रहा पूरे घर में मक्खियां का नामो-निशान तक न रहा । मिट्टी और गोवर से लिपे—पुते घर बड़े सुहाने एवं देव घर से बन गये । इसके फलस्वरूप इस महोल्ले में बीमारी का नाम तक नहीं रहा । छोटे—बालक बालिकाऐं हृष्ट-पुष्ट एवं सुन्दर शरीर वाले बन गये। क्योंकि स्वास्थ्य ही सच्चा धन है । किसी ने सच ही कहा है-पहला सुख निरोगी काया ।" यही नारा सबके मन भाया ।

सज्जनता का दण्ड

किसी ने सत्य ही कहा है कि:—

"रांड रँडापो काटै, पर लंगवाड़ा काटण को देवेनी ।

यही घटना हमारे इन दोनों केन्द्रों के सचालको के साथ हुई । दोनों ही केन्द्र इस महोल्ले की सेवा सभी प्रकार से करने लगे । महिलाऐं भी दो—तीन महीनों में ही घर की सफाई, वस्त्रों एवं वर्तनों की सफाई रखने के साथ-साथ इन केन्द्रों से मिलने वाले आर्थिक लाभ से भी परिचित होने के कारण घर में

स्वामीजी वीने वात की वात में खुला दी । पर मास्टर साहब म्हारी तो जीवका जा रही है। इयेरो तो उपाय आपने क्यूं न क्यूं करणो ही पड़सी । इं पर मास्टर साहब थोड़ो जोर लगायर कह्यो:—

"डरो क्यूं हो खत्री साहब मोहन री बदली तो होणी ही है । साथ में इं ज्ञानवती रा पूरिया अठे हूँ और लदा देस्यूं । पर है सगली पीसां री खीर। रुपया आपने ओर लगाणा पड़सी । कठै ही जाओ सगला खाण तांई मूंह वायां बैठ्या है । करां तो कांई करां ।

खत्री······रुपयां कानी मत शंको । पण रुपया लागर काम हो ज्याणो चाहीजे । मजेदारी इंमे ही है । आं दोन्या नै आप दूर गांवां में बदलवा द्यो तो रुपया भलाई कतराई लागो । इ री मने सोच कोनी—

मास्टर साहब:—तो उठो खत्री साहब आपां अबार ही एम. ल. ए. साहब कनै चालां ।

खत्री······साहब अचम्भे आयर कह्यो !

"एम. एल. ए. साहब कनै ।"

"हां एम. एल. ए. साहब कनै ! आप इंया डरता सा कींया बोल्यां ।"

खत्री……मनै तो डर ओ लागै है कठै उल्टी निवाज गलै में न आ ज्याय ।

मास्टर……"आयगी ओ आयगी खत्री साहब । आप तो सफा ही भोला आदमी लागो हो । खत्री होयर अतरा डरा हो । खतर्यां रै पगां हूं दीयेड़ी गांठ वड़ा-वड़ा हूं हाथों हूँ को खुलैनी ।"

खत्री……डरनै री वात कोनी मास्टर साहब । वात है रुपया-पीसा देयर काम कराणेरी । काल नैं रुपया रै लेण—देण रो पतो चल जाय। तो-कठै ही आपा नैं न फसा ले ।

मास्टर—"जद तो हूँ कहूं हो हूँ कि आप घणा भोला हो ।

खत्री……इये में भोले स्याणेरी कांई वात है ।

मास्टर……भोले-स्याणेरी बात आ है खत्री साहब कि आपने हालतांई ओ पतो कोनी कि एम.एल.ए. वणे क्यूं है ।"

खत्री……तो आज आप वता द्यो क्यूं वणे है।

मास्टर……बणे है आपरो घर बणावण वास्ते

खत्री……'घर बणावण वास्ते'

मास्टर……हां घर वणावण वास्ते । इमेही कोई भूठ है के । आज जितरी बुरायां चाल रही है आमें

साहब क्या आप म्हाने छोड़र जावो हो ?

मास्टर साहब ने निराशा भरे शब्दों में कहा—"ओर मेरे पास इसके सिवाय चारा ही क्या है। विभाग की आज्ञा का तो—आदर करना ही पड़ेगा।"

उनमें से एकने फिर पूछा—

"मास्टर साहब आपरी शिकायत करी कुण आतो आप म्हाने बता द्यो ?

मास्टर—करी कुण आतो मैं को बता सकूं नो। पण करी आपाणे इये महोल्ले रे लोगां ही है। हुक्म में आ ही लिखेड़ी है—

सगला एक साथ बोल्या—"मास्टर साहब साव कूड़ी बात है। म्हाने तो घीसालाल खत्री री करतूत लागे है। ओ कई दिना हूं आपरे लार पड़ेड़ो है—म्हे इने मास्टर गड़बड़ीलाल रे साथे एमएले सावरे घर कने भी चक्कर काटतो देख्यो हो। अब म्हे चावा हां कि म्हारी करेड़ी शिकायत रो कागद म्हाने देखण ने मिल जाय तो म्हे साच कूड़ रो पतो लगा ल्यां।"

मास्टर—म्हारी तो भाइयो! आप लोगां हूं आ ही बिनती है कि आप अब इं बात ने छेड़ो ही मत—

बदली तो सरकारी नोकरां री होती ही आवे है—इमे कोई नई बात कोनी—रही बात शिकायत री सो किसी भाई रे म्हारो काम को जच्यो है—नी तो वी शिकायत कर दी है। आछी बात तो आ रहती कि वो भाई मने ही आयर कह देतो— खैर ईश्वर करै बा आछी ही करे है ।

इये पर गोपाल भाई रो बेटो रामदेव बोल्यो—"नहीं मास्टर साहब म्हे बातरो निचोड़ तो काडर ही छोड़स्यां । अगर की भाई म्हारे में हूँ शिकायत करी तो म्हे बीने पूछर छोड़स्याँ कि बात है कांई ?

मास्टर—तो आज शनिवार है शायद स्वामीजी जरूर पधारेला—आपांरी इं तमाम उन्नति रा देणे वाला स्वामीजी ही है—आपांनै सगला हूँ पहल्या स्वामीजी आगे ही आपणी बात राखणी चाइजे । आगे जिस्यो स्वामीजी कहवै बींया करस्यां ।

आ बात सगला रे ही जचगी—

आज शाम नै प्रार्थना स्थल पर महोल्ले रा छोटे हूं लेयर बड़े-बुड्ढे तक सगला ही भेला होय ग्या—

स्वामीजी महाराज समय पर पधारया—ज्यूं ही स्वामीजी आपरे आशण पर विराज्या । गोपाल भाई ने हाथ जोड़ कहयो—महाराज म्हारे इये महोल्ले में

झूठी शिकायत महोल्ले रे नाम हूं करायर एमेले साहब री शिफारिस हूं आंरी बदली करादी—यों रो महोल्ले वाला पर तो जोर चाल्यो कोनी वैर काढ्यो भाई मोहन और वहन ज्ञानवती हूं। पण म्हे आनें अठे हूं जाण देणा को चावांनी। कारण म्हारी उन्नति आं दोनू भाई-वहना री कोशिश हूं ही हुई है और आगे होसी। सो आप एक-दो साल अह भाई-वहन अठे ही रहवे जिस्यो उपाय करणे री मारग बताओ जिके हूं म्हाने आपरे आशीर्वाद हूं सफलता मिल जाय—

आ बात सुणर स्वामीजी थोड़ी देर तो मौन रहे। फिर गम्भीर वाणी में बोले—

—भाई और वहनो मैं मेरे से हो सकेगी इतनी सहायता आप लोगों की करूंगा। आशा है—भगवान आप लोगों को सफलता प्रदान करेगा। ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

कल ठीक १२ बजे भाई मोहन, वहन ज्ञानवती और सुधार कमेठियों के सभी सदस्य-अध्यक्ष शिक्षा विभाग के कार्यालय पहुंच जांय। इसमें भूल न हो। कार्यालय आप लोगों को भाई मोहन ले जायगा—यह मेरा आदेश है।

किसी कवि ने सत्य ही कहा है—
होगी सफलता क्यूं नहीं, कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।
आपत्तियों के बार सारे, वीर बन कर के सहो॥

इतना कह कर स्वामीजी ने भाई मोहन को अपने प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम को चालू करने का आदेश देकर सभास्थल से प्रस्थान कर गये—

दूसरे दिन हालांकि रविवार था तो भी क्योंकि-स्वामीजी का आदेश था—भाई मोहन सदल-बल अध्यक्ष-शिक्षा विभाग के कार्यालय में ठीक ११.३० पर ही पहूँच गया।

१२ बजते-बजते अध्यक्ष शिक्षा विभाग उनके निजी सहायक, सम्बन्धित अहलकार एवं निरीक्षक एवं निरीक्षिका भी अपने सहायकों के साथ आ पहुंचे।

अध्यक्ष महोदय ने सबसे पहले शिकायती पत्रों को देखा—उसमें लिखे नामों को पढ़कर सुनाया—शिकायत जो उस दरख्वास्त में की गई थी पढ़कर सुनाई। फिर सरस्वती महोल्ले के सदस्यों से पूछा—अब आपलोग बताओ कि इसमें सत्य कहाँ तक है—

सभी ने एक स्वर में कहा—श्रीमान शिकायत साव कूड़ी है। दस्तखत जाली हैं। जांच

करने वाले अफसर हैं आप पूछिये कि वो म्हाने पिछाणै है या नहीं । यदि वो म्हाने पहचाण लेसी जद तो उणने जांच की है और दस्तखत और अगूठा म्हारा ही है। जदि वो म्हानै जाणै ही कोनी जद वो साव भूठो है—

इस पर अवर निरीक्षक और अवर निरीक्षिका से अध्यक्ष महोदय ने पूछा–कृपा करके जिन–जिन के व्यान आप लोगों ने लिये हैं–उनको इन लोगों में से पहचान कर नाम बताइये ।

बात सत्य थी कि जांच करने कोई गया ही नहीं था । सारी की सारो कार्यवाही घीसालाल के बताये नामो के अनुसार एम.एल.ए. साहब के बगले पर ही की गई थी । अब वो विचारे करे तो क्या करे। इधर पडे तो कुआ–उधर पड़े तो खाड वाली कहावत उनके साथ चरितार्थ हो गई । खड़े-खड़े एक दूसरे का मुह देखने लगे ।

इस पर अध्यक्ष महोदय ने निरीक्षक एव निरीक्षिका महोदया से पूछा–आपने कभी इस महोल्ले में चलने वाले प्रौढ–शिक्षा प्रसार केन्द्रो को देखने का कष्ट किया था । या नहीं । आप इसे न भूले प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र भी आपके ही केन्द्र हैं—भले ही

उन्हें कोई समिति ही क्यों न चलावे। क्या आपको यह विश्वास है कि वहाँ पर कोई केन्द्र चल ही नहीं रहा है। जैसा कि शिकायत पत्र में दर्ज है और आपके सहायक लिख रहे हैं।

वो भी बोले तो क्या बोले। कार्यवाही तो सारी की सारी एम.एल.ए. साहब के कहे अनुसार घड़ी गई थी। उनको यह भी पता नहीं था कि इन केन्द्रों का पता अध्यक्ष महोदय को किस प्रकार लगा—

शिकायत पत्र में लिखाया गया था कि एक पाखंडी साधु के जाल में मास्टर-मास्टरनी और २-४ लंगवाड़े आये हुये हैं। वे सारे महोल्ले को बिगाड़ रहे है।
अध्यक्ष महोदय ने हंसकर महोल्ले वालों से पूछा कि क्या कोई पाखंडी साधू भी—आपके महोल्ले में आता है।

यह सुनते ही सभी ने एक स्वर से कहा हां श्रीमान आता है—उसी साधु की कृपा है आज हमारा महोल्ला सब तरह से सुखी है। हमारा खून चूमने वाले सभी जीवों से उन्हीं महात्मा ने हमारा पिंड छुड़ाया है।

रहे हों और गांव एक मत से तथा दूसरे सम्बन्धित अधिकारी इस बात को स्वीकार करते हों तो ऐसे देश-भक्त अध्यापक-अध्यापिका को राष्ट्रीय पुरस्कार दिये जाने की सिफारिस अविलम्ब की जाय—

इसकी एक-एक प्रति भाई मोहन और बहन ज्ञानवती को भी दी गई—

षड़यन्त्रकर्त्ताओं को क्या मिला वो वोही जाने पर यह सिद्ध हो गया कि अन्त भले का भला ही होता है—

एक नई बात यह हुई कि उस दिन बाद स्वामीजी उस मोहल्ले में नही पधारे। लोग-बागों की धारणा थी कि स्वामीजी स्वयं अध्यक्ष शिक्षा-विभाग ही थे । क्योंकि इतनी गहरी जानकारी प्रत्यक्षदर्शी विना नहीं हो सकती ।

दूसरी बात उल्लेखनीय यह हुई कि भाई मोहन लाल के कहने पर भाई घींसालाल खत्री को अपना

इसमें लिखने वालों ने यह किस आधार पर लिख दिया कि वह साधु पाखंडी है—आज पूरे छः महीने से वे हर शनिवार को हमारे महोल्ले में शाम को आते हैं। आज तक उन्होने हमारे महोल्ले का पानी तक नहीं पीया है। हमको यह भी पता नहीं है कि महाराज रहते कहां है—ऐसे महात्मा को बुरा वताने वालों काकभी भला नहीं होगा। यह हम सब लोगों की पक्की धारणा है—

चूंकि शिकायत सारी की सारी मन घड़ंत थी। सही बात का पता स्वामीजी द्वारा अध्यक्ष महोदय को रत्ती-रत्ती काथा। निरीक्षक महोदय एवं निरीक्षका महोदया ने कभी भूल करके ही प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र नहीं देखे थे। यह पता भी अध्यक्ष महोदय को था। इस कारण उन्होंने अपने निजि सहायक को उसी समय आदेश दिया कि भाई मोहन और वहन ज्ञानवती का स्थानान्तर महोल्ला सरस्वती से अध्यक्ष शिक्षा-विभाग की स्वीकृति लिये विना नहीं किया जाय। जो अध्यापक एवं अध्यापिका ईमानदारी के साथ प्रौढ़-शिक्षा-प्रसार केन्द्रभी चलाते हैं। गांव या महोल्ले में सभी प्रकार के सुधार करने में सफल

अपराध स्वीकार करने के पश्चात् सहकारी भंडार में भंडारी का पद दे दिया गया और सहकारी समिति का सदस्य बना लिया गया। सत्रीजी के अपने अनुभव के कारण सहकारी-समिति को अच्छा लाभ मिला।

इन तमाम घटनाओं को देखने से यह साफ प्रकट होता है कि—

"जहां चाह वहां राह"